गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 339
दि. 12.04.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

बंगाल में सत्ता परिवर्तन का शंखनाद: अमित शाह का सिंडिकेट राज खत्म करने का वादा, सुरक्षा और विकास के मुद्दों पर तीखा हमला

Kolkata और उससे सटे जिलों में चुनावी हलचल अब अपने चरम की ओर बढ़ती नजर आ रही है। पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक बार फिर गर्माहट उस समय बढ़ गई जब केंद्रीय गृह मंत्री Amit Shah ने बांकुड़ा जिले के ओंडा क्षेत्र में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए राज्य की सत्तारूढ़ सरकार पर तीखे हमले किए और आगामी विधानसभा चुनावों के लिए भारतीय जनता पार्टी का चुनावी बिगुल फूंक दिया। इस जनसभा में उन्होंने न केवल राज्य की कानून व्यवस्था और प्रशासनिक कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए, बल्कि 'सिंडिकेट राज' और 'कटमनी' जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाकर जनता के बीच परिवर्तन की अपील भी की।

सभा में उमड़ी भीड़ के बीच अमित शाह ने अपने भाषण की शुरुआत बंगाल की वर्तमान स्थिति को लेकर चिंता जताते हुए की। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य में एक समानांतर व्यवस्था विकसित हो चुकी है, जिसे 'सिंडिकेट राज' के नाम से जाना जाता है। उनके अनुसार, राज्य में कोई भी व्यक्ति यदि घर बनाना चाहता है या निर्माण कार्य करना चाहता है, तो उसे बालू, सीमेंट और अन्य निर्माण सामग्री खरीदने के लिए तथाकथित सिंडिकेट को भुगतान करना पड़ता है। शाह ने इसे आम जनता के साथ खुला अन्याय बताते हुए कहा कि यह व्यवस्था लोकतांत्रिक शासन के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है।

उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि बंगाल में भाजपा की सरकार बनती है, तो इस सिंडिकेट राज को पूरी तरह समाप्त कर दिया जाएगा और एक पारदर्शी, जवाबदेह और भ्रष्टाचार मुक्त शासन प्रणाली लागू की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा का लक्ष्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि राज्य के प्रशासनिक ढांचे को सुधारना और जनता को उनके अधिकार दिलाना है।

अमित शाह ने अपने भाषण में राज्य की कानून व्यवस्था को लेकर भी गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि पश्चिम बंगाल में अपराध की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं और

विशेष रूप से महिलाओं की सुरक्षा को लेकर स्थिति चिंताजनक है। उन्होंने कहा कि राज्य की वर्तमान सरकार इस मोर्चे पर पूरी तरह विफल रही है। उन्होंने जनता को आश्वस्त किया कि यदि भाजपा सत्ता में आती है, तो महिलाओं की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी और इसके लिए 24 घंटे सक्रिय सुरक्षा तंत्र विकसित किया जाएगा।

उन्होंने यह भी कहा कि जघन्य अपराध करने वालों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। उनके शब्दों में, "अपराधी चाहे कहीं भी छिपे हों, उन्हें पाताल से भी खोजकर सजा दी जाएगी।" इस बयान के जरिए उन्होंने यह संदेश देने की कोशिश की कि भाजपा कानून व्यवस्था को लेकर सख्त रुख अपनाने वाली है।

सभा के दौरान अमित शाह ने घुसपैठ के मुद्दे को भी जोरदार तरीके से उठाया। उन्होंने इसे राज्य की सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बताया और कहा कि सीमा पार से हो रही अवैध घुसपैठ न केवल जनसंख्या संतुलन को प्रभावित कर रही है, बल्कि इससे अपराध और अस्थिरता भी बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि "देश कोई धर्मशाला नहीं है," जहां कोई भी बिना अनुमति प्रवेश कर सके। इस बयान के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे को चुनावी विमर्श के केंद्र में लाने का प्रयास किया।

उन्होंने वादा किया कि भाजपा सरकार बनने के बाद घुसपैठ पर पूरी तरह रोक लगाई जाएगी और जो लोग अवैध रूप से देश में रह रहे हैं, उन्हें कानून के अनुसार बाहर निकाला जाएगा। यह मुद्दा खासतौर पर सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय रहा है, और शाह ने इसे अपने भाषण में प्रमुखता से उठाकर उस वर्ग को संबोधित करने की कोशिश की।

किसानों के मुद्दे पर भी अमित शाह ने अपनी बात रखी और बांकुड़ा तथा आसपास के क्षेत्रों में आलू किसानों की समस्याओं का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि राज्य में किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है, जिसका मुख्य कारण बिचौलियों का वर्चस्व है। उन्होंने वादा किया कि भाजपा सरकार बनने पर किसानों की उपज को देशभर के बाजारों तक पहुंचाने की व्यवस्था की जाएगी, जिससे उन्हें उनकी मेहनत का सही मूल्य मिल सकेगा और उनकी आय में वृद्धि होगी।

सभा में उन्होंने राजनीतिक हिंसा का मुद्दा भी उठाया, जो पश्चिम बंगाल की राजनीति में लंबे समय से चर्चा का विषय रहा है। अमित शाह ने दावा किया कि राज्य में अब तक भाजपा के 300 से अधिक कार्यकर्ताओं की हत्या की जा चुकी है। उन्होंने इसे लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा बताते हुए कहा कि ऐसी घटनाएं यह दर्शाती हैं कि राज्य में राजनीतिक विरोध को किस तरह दबाने की कोशिश की जा रही है।

उन्होंने जनता से अपील की कि वे बिना किसी डर के मतदान करें और अपने लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग करें। उन्होंने यह भी कहा कि चुनाव आयोग ने सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम किए हैं और हर मतदाता की सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी। इसके साथ ही उन्होंने यह भरोसा दिलाया कि यदि भाजपा सत्ता में आती है, तो राजनीतिक हिंसा में शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

अमित शाह के इस भाषण को आगामी चुनावों के लिए भाजपा की रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जा रहा है। उन्होंने अपने संबोधन में उन सभी मुद्दों को छुआ, जो आम जनता के जीवन से जुड़े हुए हैं—चाहे वह कानून व्यवस्था हो, महिलाओं की सुरक्षा, किसानों की समस्याएं या फिर भ्रष्टाचार और घुसपैठ जैसे बड़े मुद्दे।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस तरह के आक्रामक भाषणों के जरिए भाजपा बंगाल में अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश कर रही है। वहीं दूसरी ओर, सत्तारूढ़ सरकार भी इन आरोपों का जवाब देने और अपनी उपलब्धियों को जनता के सामने रखने में जुटी हुई है। आने वाले दिनों में यह चुनावी मुकाबला और भी दिलचस्प होने की संभावना है।

इस जनसभा ने यह स्पष्ट कर दिया है कि पश्चिम बंगाल का चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का मुद्दा नहीं, बल्कि यह राज्य की दिशा और दशा तय करने वाला एक महत्वपूर्ण मोड़ भी है। जनता के सामने अब यह विकल्प है कि वह किस तरह के शासन को चुनती है—वर्तमान व्यवस्था को जारी रखती है या फिर परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाती है।

फिलहाल, अमित शाह के इस संबोधन ने बंगाल की राजनीति में नई ऊर्जा भर दी है और यह संकेत दे दिया है कि आने वाले चुनावों में मुकाबला बेहद कड़ा होने वाला है। जनता की नजर अब राजनीतिक दलों के वादों और उनके क्रियान्वयन की संभावनाओं पर टिकी हुई है, और यही तय करेगा कि बंगाल की सत्ता किसके हाथों में जाएगी।

दोस्ती बनी मौत की वजह: धारवाड़ में यूथ कांग्रेस नेता की घर में घुसकर हत्या, शादी से पहले मातम में बदला घर

Dharwad से सामने आई यह सनसनीखेज घटना केवल एक हत्या नहीं, बल्कि रिश्तों के टूटते भरोसे और राजनीतिक तनाव के खतरनाक रूप की कहानी बन गई है। यूथ कांग्रेस के उभरते नेता Faiyaz Pathan की उनके ही घर में घुसकर बेरहमी से हत्या कर दी गई, और सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इस पूरे हत्याकांड की तस्वीरें सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गईं। जिस घर में कुछ ही दिनों बाद शहनाइयां बजने वाली थीं, वहां अब सन्नाटा और मातम पसरा हुआ है।

यह घटना उस समय हुई जब फैयाज अपने घर पर मौजूद थे। अचानक कुछ लोग घर में घुसे और उन पर ताबड़तोड़ हमला कर दिया। हमला इतना तेज और सुनियोजित था कि फैयाज को संभलने का मौका तक नहीं मिला। हमलावरों ने बेरहमी से उन्हें निशाना बनाया और मौके से फरार हो गए। आसपास के लोगों को जब इस घटना की जानकारी मिली, तो इलाके में हड़कंप मच गया। तुरंत पुलिस को सूचना दी गई और घायल अवस्था में फैयाज को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

इस हत्या ने पूरे इलाके को दहला दिया है, लेकिन इससे भी ज्यादा चौंकाने वाला पहलू तब सामने आया जब पुलिस जांच में यह खुलासा हुआ कि इस हमले के पीछे कोई बाहरी दुश्मन नहीं, बल्कि फैयाज के अपने ही दोस्त

थे। पुलिस कमिश्नर N Shashikumar के अनुसार, प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट हुआ है कि हमलावर फैयाज के करीबी थे और वे एक ही राजनीतिक दल से जुड़े हुए थे। यह तथ्य इस घटना को और भी गंभीर और जटिल बना देता है।

बताया जा रहा है कि पिछले कुछ समय से फैयाज और उनके दोस्तों के बीच किसी बात को लेकर मतभेद चल रहे थे। यह मतभेद धीरे-धीरे बढ़ते गए और अंततः एक खूनी साजिश में बदल गए। पुलिस को शक है कि इसी आपसी रंजिश के चलते इस हत्या को अंजाम दिया गया। हालांकि, अभी तक इस विवाद का सटीक कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है, लेकिन जांच एजेंसियां हर पहलू की गहराई से पड़ताल कर रही हैं।

इस घटना का एक और बेहद भावुक पहलू यह है कि फैयाज की शादी महज दो हफ्ते बाद, यानी 24 अप्रैल को होने वाली थी। परिवार में शादी की तैयारियां चल रही थीं, रिश्तेदारों का आना-जाना शुरू हो चुका था, और घर में खुशियों का माहौल था। लेकिन अचानक आई इस दुखद घटना ने सब कुछ बदलकर रख दिया। अब वही घर, जहां जश्न की तैयारियां हो रही थीं, वहां मातम का सन्नाटा पसरा हुआ है। परिवार के लोग इस घटना से गहरे सदमे में हैं और उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा कि उनके बेटे के साथ ऐसा कुछ हो सकता है।

पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तुरंत जांच शुरू कर दी है। सीसीटीवी फुटेज को खंगाला जा रहा है और उसमें कैद हमलावरों की पहचान की जा रही है। शुरुआती जानकारी के आधार पर कुछ संदिग्धों को हिरासत में लिया गया है और उनसे पूछताछ की जा रही है। पुलिस यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही है कि क्या इस साजिश में और भी लोग शामिल थे या नहीं।

इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या आज के समय में रिश्तों पर भरोसा करना सुरक्षित है? जब दोस्त ही दुश्मन बन जाएं, तो व्यक्ति किस पर विश्वास करे? यह मामला केवल एक आपराधिक घटना नहीं, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी गंभीर चिंता का विषय है। राजनीतिक दृष्टिकोण से भी यह घटना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें एक ही दल से जुड़े लोगों के बीच संघर्ष सामने आया है। इससे यह संकेत मिलता है कि आंतरिक मतभेद किस हद तक बढ़ सकते हैं और कैसे वे हिंसा का रूप ले सकते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि राजनीति में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं कई बार रिश्तों को कमजोर कर देती हैं, जिसका परिणाम इस तरह की घटनाओं के रूप में सामने आता है।

स्थानीय लोगों में इस घटना को लेकर गुस्सा और भय दोनों का माहौल है। लोग यह जानना चाहते हैं कि आखिर उनके बीच रहने वाले लोग इतने खतरनाक कैसे हो सकते हैं। कई लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि दोषियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर कड़ी से कड़ी सजा दी जाए, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि वे इस मामले को बेहद गंभीरता से ले रहे हैं और जल्द ही सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया है कि जांच निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से की जाएगी और किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा।

ऊर्जा बाजार में बड़ा दखल: सरकार ने डीजल और जेट फ्यूल पर बढ़ाया निर्यात शुल्क, तेल कंपनियों को झटका

New Delhi से सामने आए इस बड़े फैसले ने देश के ऊर्जा क्षेत्र में हलचल मचा दी है। केंद्र सरकार ने शनिवार को डीजल और एविएशन टर्बाइन फ्यूल (एटीएफ) पर निर्यात शुल्क यानी विंडफॉल टैक्स में भारी बढ़ोतरी करते हुए तेल कंपनियों को स्पष्ट संकेत दिया है कि घरेलू जरूरतों को प्राथमिकता देना अब अनिवार्य होगा। इस निर्णय के तहत डीजल पर निर्यात शुल्क बढ़ाकर 55.5 रुपये प्रति लीटर और जेट फ्यूल पर 42 रुपये प्रति लीटर कर दिया गया है, जो तुरंत प्रभाव से लागू हो चुका है। वित्त मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब वैश्विक ऊर्जा बाजार में अस्थिरता बनी हुई है और कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव जारी है। खासतौर पर पश्चिम एशिया में चल रहे तनाव ने अंतरराष्ट्रीय बाजार को प्रभावित किया है, जिसका असर भारत जैसे आयात-निर्भर देश पर भी पड़ना स्वाभाविक है। सरकार का मानना है कि इस स्थिति में घरेलू आपूर्ति को सुरक्षित रखना सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

दरअसल, पिछले कुछ समय से यह देखा जा रहा था कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें अधिक होने के कारण कई निर्यातक कंपनियां घरेलू बाजार की बजाय विदेशी बाजारों में डीजल और एटीएफ बेचने में ज्यादा रुचि दिखा रही थीं। इससे देश के भीतर इन ईंधनों की उपलब्धता प्रभावित होने का खतरा बढ़ गया था। सरकार ने इसी प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए यह कड़ा कदम उठाया है, ताकि कंपनियां घरेलू जरूरतों को नजरअंदाज न कर सकें।

यदि पिछली दरों पर नजर डालें तो 26 मार्च को डीजल पर 21.50 रुपये प्रति लीटर और एटीएफ पर 29.5 रुपये प्रति लीटर का निर्यात शुल्क लगाया गया था। अब इन दरों में अचानक और बड़ी बढ़ोतरी यह दर्शाती है कि सरकार स्थिति को लेकर कितनी गंभीर है। हालांकि पेट्रोल पर निर्यात शुल्क अब भी शून्य रखा गया है, जिससे यह संकेत मिलता है कि फिलहाल सरकार की प्राथमिक चिंता डीजल और जेट फ्यूल की उपलब्धता को लेकर है।

इस पूरे घटनाक्रम के पीछे वैश्विक स्तर पर चल रहा भू-राजनीतिक तनाव भी एक अहम कारण है। पश्चिम एशिया में हाल के दिनों में बढ़े सैन्य संघर्ष ने तेल आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित किया है। खासतौर पर Iran, United States और Israel के बीच बढ़ते टकराव ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में अस्थिरता पैदा कर दी थी। हालांकि हाल ही में दो हफ्ते का सीजफायर लागू होने से स्थिति कुछ हद तक शांत हुई है, लेकिन इसका असर अभी भी बाजार पर देखा जा रहा है।

सरकार का यह भी कहना है कि इस फैसले का घरेलू खुदरा कीमतों पर कोई सीधा असर नहीं पड़ेगा। यानी आम उपभोक्ताओं को पेट्रोल और डीजल की कीमतों में फिलहाल किसी तरह की बढ़ोतरी का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह आश्वासन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आमतौर पर इस तरह के फैसलों के बाद लोगों में कीमतों को लेकर चिंता बढ़ जाती है।

ऊर्जा मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार, देश में फिलहाल पेट्रोल और डीजल का पर्याप्त भंडार मौजूद है और सभी रिफाइनरियां उच्च क्षमता पर काम कर रही हैं। सरकार ने यह भी स्पष्ट किया है कि किसी तरह की कमी की आशंका नहीं है और आपूर्ति पूरी तरह सामान्य बनी हुई है। इसके साथ ही एलपीजी सिलेंडरों की डिलीवरी भी सामान्य रूप से जारी है, जिससे आम जनता को किसी प्रकार की असुविधा न हो। हालांकि इस फैसले का असर तेल कंपनियों पर जरूर पड़ेगा। निर्यात पर अधिक शुल्क लगने से उनकी अंतरराष्ट्रीय बिक्री की लाभप्रदता कम हो जाएगी, जिससे वे घरेलू बाजार में अधिक आपूर्ति करने के लिए प्रेरित होंगी। यह कदम सरकार की उस नीति का हिस्सा है, जिसके तहत वह ऊर्जा संसाधनों के प्रबंधन में संतुलन बनाए रखना चाहती है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह निर्णय अल्पकालिक रूप से बाजार को स्थिर करने में मदद कर सकता है, लेकिन दीर्घकालिक समाधान के लिए भारत को अपनी ऊर्जा निर्भरता को कम करने की दिशा में भी कदम उठाने होंगे। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर बढ़ना और वैकल्पिक ईंधनों का विकास इस दिशा में महत्वपूर्ण हो सकता है। इस बीच, सरकार ने नागरिकों से अपील की है कि वे किसी भी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान न दें और केवल आधिकारिक जानकारी पर ही भरोसा करें। राज्य सरकारों को भी निर्देश दिए गए हैं कि वे नियमित प्रेस ब्रीफिंग के माध्यम से सही जानकारी जनता तक पहुंचाएं, ताकि किसी प्रकार की भ्रम की स्थिति उत्पन्न न हो। यह भी सामने आया है कि कुछ उपभोक्ताओं ने पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) का उपयोग बढ़ाने के लिए अपने एलपीजी कनेक्शन सरेंडर किए हैं, जो ऊर्जा खपत के पैटर्न में बदलाव का संकेत देता है। हालांकि यह संख्या अभी सीमित है, लेकिन भविष्य में यह प्रवृत्ति और बढ़ सकती है।

तमिलनाडु की राजनीति में नई लहर: थलपति विजय का हुंकार, 'सीटी' की गूंज के साथ सत्ता परिवर्तन की चुनौती

Chennai की सियासी फिजाओं में इन दिनों एक अलग ही हलचल देखने को मिल रही है। दक्षिण भारतीय सिनेमा के सुपरस्टार से नेता बने Vijay ने जब से सक्रिय राजनीति में कदम रखा है, तमिलनाडु का राजनीतिक समीकरण तेजी से बदलता नजर आ रहा है। उनकी पार्टी Tamilaga Vettri Kazhagam (टीवीके) अब आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर पूरी ताकत के साथ मैदान में उतर चुकी है। हाल ही में आयोजित एक बड़ी बैठक में विजय ने अपने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए चुनावी बिगुल फूंक दिया और साफ कर दिया कि यह चुनाव केवल सत्ता का नहीं, बल्कि व्यवस्था परिवर्तन का अभियान है।

शनिवार को आयोजित इस अहम सभा में विजय का अंदाज वही था, जो उनके प्रशंसकों ने फिल्मों में देखा है—जोशीला, आत्मविश्वास से भरा और सीधे दिल को छू लेने वाला। उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं से भावुक अपील करते हुए कहा कि आने वाले दिन केवल प्रचार के नहीं, बल्कि इतिहास रचने के हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह चुनावी अभियान केवल पोस्टर, बैनर और भाषणों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसे एक जनआंदोलन का रूप देना होगा।

विजय ने अपने संबोधन में सबसे ज्यादा जोर संगठन की जमीनी ताकत पर दिया। उन्होंने कहा कि अगले दस दिन पार्टी के लिए निर्णायक साबित होंगे और यही समय है जब हर कार्यकर्ता को अपने घर से निकलकर जनता के बीच जाना होगा। उन्होंने कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि वे हर गली, हर मोहल्ले और हर घर तक पहुंचें और लोगों को पार्टी की विचारधारा से जोड़ें। खासतौर पर उन्होंने 'सीटी' चुनाव चिह्न को लेकर जागरूकता फैलाने पर जोर दिया, ताकि मतदाता आसानी से पार्टी की पहचान कर सकें।

उनका यह भी कहना था कि केवल सोशल मीडिया या ड्राइंग रूम की चर्चाओं से चुनाव नहीं जीते जाते। असली जीत तब मिलती है जब कार्यकर्ता जनता के बीच जाकर उनके मुद्दों को समझते हैं और उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि उनकी समस्याओं का समाधान संभव है। विजय ने अपने कार्यकर्ताओं से कहा कि वे हर मतदाता के साथ व्यक्तिगत जुड़ाव स्थापित करें और उन्हें यह महसूस कराएं कि यह चुनाव उनके भविष्य से जुड़ा हुआ है।

सभा के दौरान विजय ने इस चुनाव को एक 'पीढ़ीगत बदलाव' की लड़ाई करार दिया। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु की राजनीति लंबे समय से एक ही ढर्रे पर चल रही है और अब समय आ गया है कि इसमें बदलाव लाया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि उनकी पार्टी का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना है, जिसमें ईमानदारी, पारदर्शिता और जनसेवा को प्राथमिकता दी जाए।

उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं से यह भी अपील की कि वे किसी भी प्रकार के आपसी मतभेद को भूलकर एकजुट होकर काम करें। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय व्यक्तिगत अहंकार या मतभेदों के लिए कोई जगह नहीं होती। यदि पार्टी को जीत दिलानी है, तो सभी को मिलकर एक टीम के रूप में काम करना होगा। उन्होंने उम्मीदवारों के साथ समन्वय बनाकर काम करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया और कहा कि हर कार्यकर्ता पार्टी का प्रतिनिधि है।

विजय का यह आत्मविश्वास उनके भाषण में साफ झलक रहा था। उन्होंने कहा कि जीत निश्चित है, लेकिन इसके लिए अंतिम क्षण तक पूरी ताकत झोंकनी होगी। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि वे यह मानकर चलें कि हर वोट महत्वपूर्ण है और हर एक मतदाता तक पहुंचना जरूरी है।

राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, विजय की एंट्री ने तमिलनाडु की राजनीति में एक नई ऊर्जा भर दी है। जहां एक ओर पारंपरिक राजनीतिक दल अपनी-अपनी रणनीतियों के साथ मैदान में हैं, वहीं विजय की पार्टी एक नए विकल्प के रूप में उभरने की कोशिश कर रही है। उनकी लोकप्रियता, खासकर युवाओं के बीच, पार्टी के लिए एक बड़ी ताकत मानी जा रही है।

यह भी देखा जा रहा है कि विजय अपने फिल्मी करियर की छवि को राजनीतिक मंच पर भी भुनाने में सफल हो रहे हैं। उनके भाषणों में वही जोश और संवाद शैली देखने को मिलती है, जिसने उन्हें सिनेमा में सुपरस्टार बनाया। यही कारण है कि उनकी सभाओं में बड़ी संख्या में लोग जुट रहे हैं और उनकी बातों को ध्यान से सुन रहे हैं।

हालांकि, यह राह आसान नहीं है। तमिलनाडु की राजनीति में पहले से ही मजबूत जड़ें जमाए दलों के बीच अपनी जगह बनाना किसी भी नई पार्टी के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। लेकिन विजय ने जिस तरह से अपने अभियान को आक्रामक और संगठित रूप दिया है, उससे यह साफ है कि वे इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

उनके भाषण में बार-बार यह बात सामने आई कि यह चुनाव केवल वर्तमान के लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि यदि आज सही निर्णय लिया जाता है, तो उसका असर आने वाले वर्षों तक दिखाई देगा। यह सोच उनके अभियान को एक व्यापक दृष्टिकोण देती है, जो केवल तात्कालिक लाभ तक सीमित नहीं है।

विजय ने यह भी स्पष्ट किया कि उनकी पार्टी का लक्ष्य केवल विरोध करना नहीं है, बल्कि सकारात्मक बदलाव लाना है। उन्होंने कहा कि राजनीति में नकारात्मकता के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए और हर प्रयास जनता के हित में होना चाहिए। यह संदेश उन्होंने खासतौर पर युवाओं को ध्यान में रखते हुए दिया, जो बदलाव की उम्मीद के साथ राजनीति की ओर देख रहे हैं।

जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आ रहे हैं, तमिलनाडु की सियासत और भी गर्म होती जा रही है। सभी दल अपनी-अपनी रणनीतियों को अंतिम रूप देने में जुटे हैं। ऐसे में विजय की यह रैली और उनका जोशीला संबोधन इस बात का संकेत है कि मुकाबला बेहद दिलचस्प और कड़ा होने वाला है। अंततः यह चुनाव केवल राजनीतिक दलों के बीच की लड़ाई नहीं है, बल्कि यह जनता के विश्वास और उम्मीदों की परीक्षा भी है।

संपादकीय

समता की आस्था

यह विडंबना ही है कि 21वीं सदी, जिसे ज्ञान की सदी भी कहा जाता है, में किसी व्यक्ति के धार्मिक स्थल विशेष जाने पर वर्ग या लिंगभेद के आधार पर रोक लगे। इस बाबत सुप्रीम कोर्ट की उस टिप्पणी से सहमत हुआ जा सकता है जिसमें कहा गया कि मंदिरों व मठों में प्रवेश में भेदभाव धर्म के लिये अच्छा नहीं है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने धार्मिक स्थलों में महिलाओं से भेदभाव के मामले में सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की थी। देश की शीर्ष अदालत का मानना था कि मंदिरों और मठों में जाने का अधिकार हर व्यक्ति को मिलना चाहिए। अदालत ने चिंता जतायी कि यदि ऐसा नहीं होता है तो समाज में विभाजन को बढ़ावा मिलेगा। जिसका धर्म विशेष की सर्वस्वीकार्यता पर भी प्रतिकूल असर पड़ेगा। दरअसल, मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली नौ सदस्यीय संविधान पीठ धार्मिक स्थलों में महिलाओं से भेदभाव के मामले में सात कानूनी सवालों पर विचार कर रही है। जिसमें केरल के बहुचर्चित सबरीमाला मंदिर में दस से पचास साल की महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध का मुद्दा भी शामिल है। दरअसल, केरल के कई संगठनों की ओर से शीर्ष अदालत में उपस्थित अधिवक्ता ने दलील दी थी कि संप्रदाय विशेष का मंदिर, इस मामले में प्रवेश की अनुमति और पूजापाठ की इजाजत एक संप्रदाय विशेष तक सीमित रख सकता है। इस प्रसंग में पीठ की न्यायाधीश बीवी नागरत्ना ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को मंदिर और मठ में प्रवेश का अधिकार मिलना चाहिए। किसी को रोका जाना हिंदू धर्म के लिए अच्छी परंपरा नहीं है। दूसरे शब्दों में इसका धर्म पर बुरा असर नहीं पड़ना चाहिए। निश्चित रूप से देशकाल व परिस्थितियों के अनुसार देश के कानून व संविधान में भी परिवर्तन किए गए हैं। ऐसा में आस्था स्थलों से जुड़ी मान्यताओं व परंपराओं पर भी तर्कशील ढंग से विचार किया जाना जरूरी है। यह किसी भी समाज में समतामूलक सोच के विस्तार के लिये अपरिहार्य शर्त होनी चाहिए। इस दिशा में उदार सोच समय की जरूरत है।

इसमें दो राय नहीं कि हमारे धार्मिक स्थल हमारी आध्यात्मिक दृष्टि को समृद्ध करने में अहम भूमिका निभाते हैं। धार्मिक होने का मतलब है ममता-समता और लोककल्याण से जुड़ी व्यापक दृष्टि का होना। श्रद्धालु किसी भी धार्मिक स्थल में मन की शांति और सुकून के लिये जाते हैं। इस बात से सहमत नहीं हुआ जा सकता है कि पूजा पद्धति व धार्मिक स्थल में प्रवेश रोकने पर हमारे आराध्य प्रसन्न होंगे। पौराणिक प्रसंगों में ऐसे उदाहरण नहीं मिलते हैं जब धरती पर अवतार लेने वाले देवताओं ने किसी वंचित समाज के व्यक्ति और महिलाओं को लेकर किसी तरह के भेदभाव को प्रश्रय दिया हो। छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब व महिला व पुरुष का भेद कभी उनके कालखंड में सामने नहीं आया। इसके बावजूद देशकाल परिस्थितियों में तथा तार्किकता के अभाव में यदि किसी तरह भेदभाव कतिपय कारणों से सामने आया भी हो, तो वक्त का तकाजा यही है कि उन्हें समय के अनुकूल ढाला जाए। आस्था के नजरिये से बात करें तो भी ईश्वर ने अपनी किसी भी रचना को लेकर कभी किसी तरह का भेदभाव नहीं किया। तो फिर उसके रचे इंसानों को किसी तरह के भेदभाव की अनुमति कैसे दी जा सकती थी। बहुत संभव है कि किसी समय में शुचिता को लेकर परंपरागत सोच रही हो। लेकिन आज विज्ञान ने कई प्राचीन धारणाओं व रूढ़ियों को बदलकर नई दृष्टि दी है। चंद्रमा हजारों साल से मानवीय आस्था का प्रतीक रहा है। हिंदू, मुस्लिम व अन्य धर्म किसी न किसी रूप में चंद्रमा को गहन आस्था के केंद्र के रूप में देखते रहे हैं। 19वीं सदी में कौन सोच सकता है कि तमाम धर्मों में पूज्य चांद पर कभी इंसान भी कदम रख सकता है। लेकिन आज यह हकीकत है कि भारत समेत कई विकसित देशों के मिशन चंद्रमा की सतह पर उतरे हैं। बहरहाल, ऐसे में उस धर्म विशेष की सर्वस्वीकार्यता को लेकर सवाल खड़े हो सकते हैं, जो व्यक्ति, वर्ग, संप्रदाय व लिंग के आधार पर किसी भी तरह का भेद करता हो। जैसा कि सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा है कि ऐसे निर्णयों का धर्म पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

आसान नहीं होता युद्ध खत्म करना

"युद्ध अक्सर संक्षिप्त होने की उम्मीद के साथ शुरू होते हैं, लेकिन इतिहास गवाह है कि उन्हें समाप्त करना कितना मुश्किल होता है। वियतनाम, अफगानिस्तान और यूक्रेन जैसे संघर्षों ने दिखाया कि युद्ध उम्मीद से कहीं अधिक खिंच सकते हैं।"

वियतनाम युद्ध में हुई किरकिरी से सबक लेते हुए जब अमेरिकी सेनाएं 1991 के खाड़ी युद्ध में उतरीं तो उन्होंने थल, नभ एवं जल सेना के ऐसे अभूतपूर्व समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत किया कि चंद दिनों में ही युद्ध का निर्णायक फैसला हो गया। आपरेशन डेजर्ट स्टार्म नाम से चला वह अभियान अमेरिका की बड़ी सैन्य सफलताओं में से एक माना जाता है।

हालांकि उसके कुछ साल बाद ही अफगानिस्तान में अमेरिका का आतंक विरोधी अभियान इतना लंबा खिंचा कि उसे कभी न समाप्त होने वाले 'अंतहीन युद्ध' की संज्ञा मिलने लगी। अमेरिकी सेना के सबसे लंबे अभियान के रूप में दर्ज हुए इस अभियान के विषय में यह भी कहा जा सकता है कि अमेरिका को अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी, क्योंकि तालिबान फिर से अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज हो गए।

इसी तरह रूस ने भी यूक्रेन पर इसी धारणा के साथ हमला किया कि कुछ ही दिनों में वह हथियार डाल देगा, लेकिन वह लड़ाई अभी तक जारी है। अक्टूबर 2023 में जब हमास के हमले के बाद इजरायल ने गाजा को निशाना बनाया तो यही माना गया था कि थोड़े समय में ही यह लड़ाई थम जाएगी, मगर उस लड़ाई का दायरा बढ़कर लेबनान, सीरिया और यमन तक विस्तारित होता गया। हालांकि जनवरी में वहां एक युद्धविराम की स्थिति तो बनी, लेकिन वहां भीषण मानवीय आपदा की स्थिति को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

ईरान युद्ध का उदाहरण लें तो उसकी शुरुआत भी संभवतः इसी विचार के साथ हुई हो कि जल्द ही इसका परिणाम सामने आ जाएगा। शुरुआती दौर में ही शीर्ष नेता अयातुल्ला खामेनेई की हत्या इसी धारणा के अनुरूप थी कि इससे शासन परिवर्तन में आसानी होगी। हालांकि खामेनेई की मौत ने शासन परिवर्तन के बजाय ईरानियों को और एकजुट करने का ही काम किया।

शासन पर पहले जो दबाव महसूस हो रहा था, वह भी छिन्न-भिन्न हो गया। फिर लड़ाई लंबे दौर में दाखिल हो गई और पूरी दुनिया उसकी तपिश महसूस करने लगी। इतिहास पर दृष्टि डालें तो यूरोपीय सैन्य नेतृत्व ने 1914 की गर्मियों में यह सोचकर युद्ध छेड़ा कि क्रिसमस तक लड़ाई थम जाएगी, मगर हुआ इसका उलटा और यह जंग नवंबर 1918 तक जारी रही।

जर्मनी ने बख्तरबंद सेना और वायुसेना के घातक उपयोग वाली ब्लिट्जक्रेग यानी बिजली की चपलता वाली रणनीति के जरिये 1940 में पश्चिमी यूरोप के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया, लेकिन यह शुरुआती सफलता भी अंततः उसे जीत नहीं दिला पाई। सोवियत संघ के साथ जर्मनी 1941 में ऐसे विध्वंसक एवं अंतहीन युद्ध में उलझा, जिसमें दोनों खेमों को ही भारी क्षति पहुंची, लेकिन इसका परिणाम जर्मनी के विभाजन के रूप में निकला।

देखा जाए तो दोनों विश्व युद्धों में जीत की कुंजी वास्तविक सैन्य शक्ति से अधिक धैर्य और लंबे समय तक संघर्ष में टिके रहने की क्षमता में निहित थी। इसी क्रम में कोरियाई युद्ध तीन वर्षों से अधिक समय तक चला और अमेरिकी सैनिक वियतनाम में एक दशक से भी अधिक समय तक तैनात रहे। हालांकि इस सबका यह अर्थ नहीं कि आधुनिक सशस्त्र संघर्षों का निर्णय तत्काल नहीं हो पाता।

जून 1967 में इजरायल ने एक सप्ताह के भीतर ही अरब देशों के गठबंधन को धूल चटा दी थी। बांग्लादेश की स्वतंत्रता के लिए हुए 1971 के युद्ध में भी भारत ने मात्र 13 दिनों की लड़ाई में ही पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया था। गत वर्ष आपरेशन सिंदूर में भारत की करीब 88 घंटों की जोरदार कार्रवाई के बाद ही पाकिस्तान संघर्षविराम की गुहार लगाने लगा था।

सैन्य रणनीतियों में संक्षिप्त स्वरूप में तीव्र प्रहार और एकाएक किए हमलों के जरिये जीत की अपनी महत्ता रही है, लेकिन इतिहास साक्षी है कि जो सेनाएं इस भरोसे के साथ रणभूमि में उतरीं, उन्हें यह अनुभूति भी हुई कि किसी भी युद्ध को अपेक्षित समय में संतोषजनक परिणामों के साथ समाप्त करना कितनी टेढ़ी खीर साबित हुआ।

संक्षिप्त युद्ध की रणनीति मुख्य रूप से प्रतिद्वंद्वी को एकाएक हमले से चौंकाने पर टिकी होती है। इसमें पूरी ताकत से ऐसे हमलों पर जोर होता है कि दुश्मन को संभलने का कोई मौका ही न मिले और उस पर निर्णायक बढ़त बनाई जाए। यह भी स्मरण रखना होगा कि छोटे युद्ध उन संसाधनों के दम पर लड़े जाते हैं जो उस समय उपलब्ध होते हैं, लेकिन लंबे खिंचने वाले युद्धों के लिए उन क्षमताओं को विकसित करना पड़ता है, जो निरंतर बदलती युद्ध स्थितियों के अनुरूप उपयोगी साबित हो सकें।

संक्षिप्त युद्ध अर्थव्यवस्था और समाज के लिए अस्थायी व्यवधान पैदा करते हैं और इनमें व्यापक आपूर्ति श्रृंखला की भी खास दरकार नहीं होती। जबकि लंबे खिंचने वाले युद्धों में ऐसी रणनीतियां आवश्यक हो जाती हैं, जो जनता का मनोबल और समर्थन बनाए रख सके। ईरान युद्ध में अमेरिका और इजरायल का सामना एक ऐसे प्रतिद्वंद्वी से हुआ, जो न केवल उसके हमलों को झेल रहा था, बल्कि उनका तत्परता से जवाब भी दे रहा था। इस दौरान ईरान ने होर्मुज जलमार्ग से ऊर्जा आपूर्ति को बाधित करके उसे एक आर्थिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। तमाम युद्धों की तरह ईरान युद्ध भी इसी पहलू को रेखांकित करने वाला साबित हुआ है कि अधिकांश युद्धों की शुरुआत इस धारणा से होती है कि वे संक्षिप्त होंगे, पर इससे कहीं अधिक कठिन निर्णय यह होता है कि लड़ाई को कब और कैसे समाप्त किया जाए।

प्रेरणा

धैर्य की गहराई में छिपा सफलता का बीज

मानव जीवन में सफलता केवल प्रयासों का परिणाम नहीं होती, बल्कि वह समय, समर्पण और सबसे महत्वपूर्ण धैर्य का सम्मिलित फल होती है। अक्सर हम अपने प्रयासों के परिणाम जल्दी देखना चाहते हैं, और जब ऐसा नहीं होता तो निराशा हमें घेर लेती है। यही स्थिति उस शिष्य की थी, जिसने वर्षों की साधना के बावजूद कोई विशेष सिद्धि प्राप्त नहीं की थी। उसकी व्याकुलता स्वाभाविक थी, क्योंकि वह अपने श्रम का प्रत्यक्ष परिणाम चाहता था। लेकिन उसके गुरु ने जो समझाया, वह केवल उस शिष्य के लिए नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए एक गहरी सीख है जो जीवन में जल्दी परिणाम पाने की अधीरता से गुजरता है।

गुरु ने चीनी बांस के बीज का उदाहरण देकर यह बताया कि प्रकृति का हर कार्य एक निश्चित समय और प्रक्रिया के अनुसार होता है। जब चीनी बांस का बीज जमीन में बोया जाता है, तो वह तुरंत अंकुरित नहीं होता। बल्कि कई वर्षों तक वह मिट्टी के भीतर ही रहता है। बाहर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ भी नहीं हो रहा, लेकिन वास्तविकता यह है कि भीतर एक गहरी और सशक्त प्रक्रिया चल रही होती है। वह बीज अपनी जड़ों को मजबूत और गहरा बना रहा होता है। यही जड़ें भविष्य में उसे ऊँचा और स्थिर बनाए रखने की शक्ति देती हैं।

आज के समय में हम सब कुछ तुरंत चाहते हैं। हमें तुरंत सफलता चाहिए, तुरंत पहचान चाहिए, और तुरंत परिणाम चाहिए। लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि जो चीजें जल्दी मिलती हैं, वे अक्सर स्थायी नहीं होतीं। जैसे एक कमजोर जड़ वाला पेड़ तेज हवा में गिर जाता है, वैसे ही बिना धैर्य और गहराई के प्राप्त की गई सफलता भी थोड़ी सी चुनौती में बिखर जाती है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति समय लेकर, धैर्य के साथ अपनी नींव मजबूत करता है, वह जीवन के किसी भी तूफान का सामना कर सकता है।

धैर्य का अर्थ केवल इंतजार करना नहीं है, बल्कि उस इंतजार के दौरान स्वयं को निरंतर बेहतर बनाना है। यह एक सक्रिय प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने भीतर की कमजोरियों को पहचानता है, उन्हें सुधारता है और अपने लक्ष्य की दिशा में निरंतर आगे बढ़ता रहता है। यह वही समय होता है जब हमारी असली परीक्षा होती है। जब बाहर से कुछ भी होता हुआ दिखाई नहीं देता, तब भीतर बहुत कुछ बदल रहा होता है।

साधना का मार्ग भी ऐसा ही होता है। इसमें तुरंत परिणाम नहीं मिलते। इसमें समय लगता है, तपस्या लगती है, और सबसे अधिक धैर्य की आवश्यकता होती है। जब कोई साधक लगातार अभ्यास करता है, ध्यान करता है और अपने मन को एकाग्र करता है, तब धीरे-धीरे उसके भीतर परिवर्तन आने लगता है। यह परिवर्तन पहले सूक्ष्म होता है, जिसे वह स्वयं भी तुरंत महसूस नहीं कर पाता। लेकिन समय के साथ वही परिवर्तन उसे एक नई ऊँचाई पर ले जाता है।

जीवन में भी जब हम किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए काम करते हैं, तो हमें इसी सिद्धांत को अपनाना चाहिए। हमें यह समझना चाहिए कि हर प्रयास तुरंत फल नहीं देता। कई बार हमें लंबे समय तक बिना किसी स्पष्ट परिणाम के काम करना पड़ता है। यही वह समय होता है जब अधिकांश लोग हार मान लेते हैं। लेकिन जो लोग धैर्य रखते हैं, वही अंततः सफलता प्राप्त करते हैं। धैर्य हमें मानसिक रूप से मजबूत बनाता है। यह हमें कठिन परिस्थितियों में भी स्थिर रहने की शक्ति देता है। जब हम धैर्य रखते हैं, तो हम अपने निर्णयों में जल्दबाजी नहीं करते। हम परिस्थितियों को समझते हैं, उनका विश्लेषण करते हैं और फिर सही दिशा में कदम बढ़ाते हैं। यही गुण हमें दूसरों से अलग बनाता है और हमें सफलता के करीब ले जाता है।

आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में धैर्य एक दुर्लभ गुण बनता जा रहा है। हर कोई जल्दी में है, हर कोई आगे निकलना चाहता है। लेकिन इस दौड़ में हम यह भूल जाते हैं कि असली जीत केवल आगे निकलने में नहीं, बल्कि स्थिर और मजबूत बने रहने में है। जो व्यक्ति धैर्य रखता है, वह न केवल अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है, बल्कि उसे लंबे समय तक बनाए भी रखता है।

गुरु की सीख यही थी कि हमें अपने प्रयासों पर विश्वास रखना चाहिए और धैर्य के साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए। जैसे चीनी बांस का बीज वर्षों तक अपनी जड़ों को मजबूत करता है, वैसे ही हमें भी अपने भीतर की शक्ति को विकसित करना चाहिए। हमें यह समझना चाहिए कि हर दिन का प्रयास, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, हमें हमारे लक्ष्य के करीब ले जा रहा है।

जब हम इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं, तो हमारे भीतर एक नई ऊर्जा का संचार होता है। हम अपने प्रयासों को लेकर अधिक सकारात्मक हो जाते हैं। हम असफलताओं से घबराते नहीं, बल्कि उनसे सीखते हैं। हम हर दिन को एक नए अवसर के रूप में देखते हैं और अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ते रहते हैं।

अंततः, धैर्य ही वह शक्ति है जो हमें हमारे सपनों तक पहुँचाती है। यह हमें सिखाता है कि हर चीज का एक समय होता है और हमें उस समय का सम्मान करना चाहिए। हमें अपने प्रयासों पर भरोसा रखना चाहिए और यह विश्वास रखना चाहिए कि सही समय आने पर हमारे प्रयास जरूर रंग लाएंगे।

इसलिए, जब भी आपको लगे कि आपके प्रयासों का कोई परिणाम नहीं मिल रहा, तो उस चीनी बांस के बीज को याद कीजिए। याद कीजिए कि वह भी वर्षों तक मिट्टी के भीतर रहा, बिना किसी दिखने वाले परिवर्तन के। लेकिन जब वह उगा, तो उसने अपनी ऊँचाई और मजबूती से सबको चौंका दिया। उसी तरह, आपका धैर्य और आपकी मेहनत भी एक दिन आपको ऐसी ऊँचाई पर ले जाएगी, जहाँ से पीछे मुड़कर देखने पर आपको अपने हर संघर्ष पर गर्व होगा।

Uttar Pradesh Voter List से दो करोड़ नाम हटाये गये, CM Yogi Adityanath की टेंशन बढ़ी, Akhilesh Yadav का चेहरा खिला!

उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान के बाद जारी अंतिम आंकड़ों ने राज्य की चुनावी तस्वीर में बड़ा बदलाव सामने रखा है। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिनवा द्वारा जारी अंतिम मतदाता सूची के अनुसार लगभग दो करोड़ मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए हैं। यह संख्या अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है और राज्य की कुल जनसंख्या तथा चुनावी भागीदारी पर गहरा प्रभाव डालने वाली है। हम आपको याद दिला दें कि उत्तर प्रदेश में विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान कुल 166 दिनों तक चला, जिसकी शुरुआत 27 अक्टूबर 2025 को हुई थी। उस समय राज्य में कुल 15 करोड़ 44 लाख मतदाता पंजीकृत थे। प्रारंभिक चरण के बाद छह जनवरी को प्रकाशित प्रारूप सूची में यह संख्या घटकर बारह करोड़ पचपन लाख रह गई थी। हालांकि इसके बाद आपत्तियों, दावों, सुनवाई और सत्यापन की लंबी प्रक्रिया के पश्चात अंतिम सूची में कुल 13 करोड़ 39 लाख 84 हजार 792 वैध मतदाता दर्ज किए गए।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने स्पष्ट किया कि जिन मतदाताओं का नाम अंतिम सूची में शामिल नहीं हो पाया है, वे पंद्रह दिनों के भीतर संबंधित जिला अधिकारी के समक्ष अपील कर सकते हैं। इसके बाद भी समाधान न मिलने पर दूसरी अपील मुख्य निर्वाचन अधिकारी के पास की जा सकती है और अंत में नया मतदाता बनने के लिए प्रपत्र छह भरा जा सकता है।

यदि जिलावार आंकड़ों पर नजर डालें तो राजधानी लखनऊ में सबसे अधिक नौ लाख चौदह हजार नाम हटाए गए, जो लगभग 22.79 प्रतिशत है। इसके बाद प्रयागराज में आठ लाख छब्बीस हजार, कानपुर में छह लाख सत्तासी हजार, आगरा में छह लाख सैंतीस हजार, गाजियाबाद में पांच लाख चौहत्तर हजार, मेरठ में पांच लाख छह हजार और बरेली में चार लाख छप्पन हजार नाम हटाए गए। विधानसभा क्षेत्रों में साहिबाबाद में तीन लाख सोलह हजार नाम हटाए जाने के साथ यह सूची में सबसे ऊपर रहा, जबकि नोएडा, लखनऊ उत्तर, आगरा कैंट और इलाहाबाद उत्तर भी प्रमुख रहे।

छह जनवरी से दस अप्रैल के बीच कुल आठ लाख पंद्रह हजार नौ सौ छियानवे मतदाताओं के नाम हटाए गए। इनमें से तीन लाख पचास हजार से अधिक लोगों ने नोटिस का जवाब नहीं दिया, लगभग तीन लाख अट्ठाईस हजार लोग स्थानांतरित पाए गए, उनहत्तर हजार से अधिक नाम बहु प्रविष्टि के कारण हटाए गए, पचपन हजार से अधिक मतदाता मृत पाए गए और दो हजार से अधिक लोग आयु या नागरिकता मानकों पर खरे नहीं उतरे।

इस पूरी प्रक्रिया के दौरान तीन करोड़ छब्बीस लाख से अधिक नोटिस जारी किए गए। लगभग एक करोड़ चार लाख मतदाता ऐसे पाए गए जिनकी जानकारी पूरी तरह से मेल नहीं खा रही थी, जबकि दो करोड़ 22 लाख मामलों में तार्किक विसंगतियां थीं। चौदह जनवरी से नोटिस जारी होने शुरू हुए और 31 जनवरी से सुनवाई की प्रक्रिया शुरू होकर 27 मार्च तक पूरी की गई।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने जोर देकर कहा कि किसी भी मतदाता का नाम बिना उचित प्रक्रिया के नहीं हटाया गया। यदि किसी का नाम प्रारूप सूची में था लेकिन अंतिम सूची में नहीं है तो यह या तो प्रपत्र में त्रुटि के कारण हुआ है या फिर सुनवाई के बाद लिया गया निर्णय है।

हम आपको बता दें कि अंतिम सूची के अनुसार राज्य में सात करोड़ तीस लाख इकहत्तर हजार इकसठ पुरुष मतदाता, छह करोड़ नौ लाख नौ हजार पांच सौ पच्चीस महिला मतदाता और चार हजार दो सौ छह तृतीय लिंग मतदाता हैं। अठारह से उन्नीस वर्ष आयु वर्ग के मतदाताओं की संख्या सत्रह लाख तिरसठ हजार तीन सौ साठ है।

एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि प्रारूप और अंतिम सूची के बीच कुल चौरासी लाख अट्ठाईस हजार सात सौ सड़सठ मतदाताओं की शुद्ध वृद्धि दर्ज की गई। इसमें बयालीस लाख से अधिक पुरुष और लगभग इतने ही महिला मतदाता शामिल हैं। इससे लिंग अनुपात में भी सुधार हुआ है, जो आठ सौ चौबीस से बढ़कर आठ सौ चौंतीस हो गया है।

जिलों में मतदाता वृद्धि के मामले में प्रयागराज सबसे आगे रहा, जहां तीन लाख उनतीस हजार से अधिक नए मतदाता जुड़े। इसके बाद लखनऊ, बरेली, गाजियाबाद और जौनपुर प्रमुख रहे। विधानसभा क्षेत्रों में साहिबाबाद, जौनपुर, लखनऊ पश्चिम, लोनी और फिरोजाबाद में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।

हम आपको यह भी बता दें कि देश के अन्य राज्यों की तुलना में उत्तर प्रदेश मतदाता विलोपन प्रतिशत के मामले में दूसरे स्थान पर रहा, जहां यह आंकड़ा तेरह दशमलव चौबीस प्रतिशत रहा। इससे आगे गुजरात रहा, जबकि अन्य राज्यों में यह प्रतिशत अपेक्षाकृत कम रहा। तीसरे पक्ष द्वारा दिए गए आवेदनों के आधार पर एक लाख बीस हजार से अधिक नाम हटाए गए। इनमें अधिकतर मामले मृत्यु, स्थायी स्थान परिवर्तन या अन्यत्र पंजीकरण से जुड़े थे।

इस पूरी प्रक्रिया में राजनीतिक दलों की भी सक्रिय भागीदारी रही। पांच प्रमुख बैठकों के अलावा नौ सौ चार बैठकों का आयोजन जिला स्तर पर किया गया। पांच लाख से अधिक बूथ स्तरीय एजेंटों ने इस प्रक्रिया में भाग लिया। इसके अतिरिक्त हजारों अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से यह विशाल अभियान सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस प्रकार उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची का यह पुनरीक्षण न केवल प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा बल्कि इससे चुनावी पारदर्शिता और सटीकता को भी नई दिशा मिली है।

लेकिन अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि इससे उत्तर प्रदेश की राजनीति पर क्या असर पड़ेगा? हम आपको बता दें कि उत्तर प्रदेश की अंतिम मतदाता सूची ने राजनीतिक हलकों में हलचल बढ़ा दी है। नई सूची में खासकर शहरी क्षेत्रों में मतदाताओं की संख्या में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है, जिससे सत्तारुढ़ दल भाजपा की चिंता बढ़ सकती है। लखनऊ, मेरठ, नोएडा, गाजियाबाद और कानपुर जैसे प्रमुख शहरों में अक्तूबर 2025 की तुलना में लगभग 19 से 23 प्रतिशत तक मतदाता घटे हैं।

अभियान

जब आस्था का धागा टूटता है, तब भाग्य भी साथ छोड़ देता है

भारतीय परंपरा में व्रत और उपासना केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं होते, बल्कि वे जीवन की गहराइयों से जुड़े हुए आध्यात्मिक सत्य को व्यक्त करते हैं। इन्हीं पवित्र परंपराओं में दशा माता का व्रत एक विशेष स्थान रखता है, जिसे चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि को अत्यंत श्रद्धा और नियमों के साथ किया जाता है। यह व्रत विशेष रूप से स्त्रियों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है, लेकिन इसका प्रभाव पूरे परिवार के भाग्य और समृद्धि पर पड़ता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार दशा माता, देवी पार्वती का ही एक रूप हैं, जो अपने भक्तों के जीवन की दिशा और दशा को नियंत्रित करने वाली शक्ति मानी जाती हैं।

इस व्रत का मूल उद्देश्य केवल सुख-समृद्धि प्राप्त करना नहीं, बल्कि अपने जीवन में संतुलन, धैर्य और विश्वास को स्थापित करना है। दशा माता का व्रत हमें यह सिखाता है कि जीवन में जो भी परिस्थितियां आती हैं, वे हमारे कर्मों और हमारी आस्था से गहराई से जुड़ी होती हैं। इस दिन नीम, पीपल और बरगद जैसे पवित्र वृक्षों की पूजा की जाती है, जो भारतीय संस्कृति में जीवन, स्थिरता और आध्यात्मिक ऊर्जा के प्रतीक माने जाते हैं। इन वृक्षों के नीचे बैठकर पूजा करने से मन में शांति और सकारात्मकता का संचार होता है।

दशा माता व्रत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है "डोरा" या पवित्र धागा, जिसे महिलाएं अपने गले में धारण करती हैं। यह धागा केवल एक प्रतीक नहीं है, बल्कि यह आस्था, सुरक्षा और समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसा माना जाता है कि जो भी भक्त सच्चे मन से इस व्रत को करता है और डोरा धारण करता है, उसके जीवन में कभी भी धन, सुख और शांति की कमी नहीं होती। लेकिन इस व्रत के साथ कुछ नियम और मर्यादाएं भी जुड़ी होती हैं, जिनका पालन करना अत्यंत आवश्यक है। यदि इन नियमों की अनदेखी की जाती है या आस्था का अपमान होता है, तो इसके परिणाम भी गंभीर हो सकते हैं।

इसी सत्य को समझाने के लिए प्राचीन काल की एक अत्यंत प्रेरणादायक और चेतावनी देने वाली कथा प्रचलित है, जो राजा नल और रानी दमयंती के जीवन से जुड़ी हुई है। यह कथा केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं है, बल्कि यह आस्था और अहंकार के बीच के संघर्ष का जीवंत उदाहरण है।

प्राचीन समय में राजा नल एक अत्यंत पराक्रमी, न्यायप्रिय और समृद्ध शासक थे। उनका राज्य वैभव और सुख-संपत्ति से परिपूर्ण था। उनकी पत्नी, रानी दमयंती, न केवल सुंदर थीं, बल्कि अत्यंत धर्मपरायण और श्रद्धालु भी थीं। वे दशा माता की अनन्य भक्त थीं और हर वर्ष पूरे विधि-विधान के साथ उनका व्रत करती थीं। उनके जीवन में संतुलन और समृद्धि का एक बड़ा कारण उनकी यही आस्था थी।

एक दिन राजा नल ने रानी के गले में एक धागा देखा और उसके बारे में जिज्ञासा व्यक्त की। रानी ने बड़े ही श्रद्धा भाव से उन्हें दशा माता के व्रत और उस धागे के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह डोरा माता की कृपा का प्रतीक है और इसे धारण करने से जीवन में कभी भी दरिद्रता नहीं आती। लेकिन राजा नल, जो अपने वैभव और शक्ति के कारण थोड़े अहंकारी हो चुके थे, उन्होंने इस बात को गंभीरता से नहीं लिया। उन्होंने इसे एक अंधविश्वास मानते हुए रानी के गले से वह धागा निकालकर फेंक दिया। राजा का यह कार्य केवल एक धागे को हटाना नहीं था, बल्कि यह आस्था और विश्वास का अपमान था। यही कारण था कि दशा माता उनसे कुपित हो गईं और उनके जीवन में विपत्तियों का दौर शुरू हो गया। धीरे-धीरे राजा नल का भाग्य उनसे दूर होने लगा। उन्होंने जुएं में अपना पूरा राजपाट खो दिया और उन्हें अपने राज्य से निर्वासित होना पड़ा। इतना ही नहीं, उन पर चोरी का झूठा आरोप भी लगा, जिससे उनकी प्रतिष्ठा भी धूमिल हो गई।

राजा और रानी की स्थिति इतनी खराब हो गई कि उन्हें जंगलों में भटकना पड़ा और अपने जीवनयापन के लिए लकड़ियां काटकर बेचनी पड़ीं। जो राजा कभी ऐश्वर्य में जीता था, वह अब साधारण जीवन जीने के लिए संघर्ष कर रहा था। यह परिवर्तन इतना अचानक और गहरा था कि किसी के लिए भी इसे सहन करना कठिन होता, लेकिन रानी दमयंती का विश्वास अडिग बना रहा। उन्होंने कभी भी दशा माता की पूजा और व्रत को नहीं छोड़ा। कठिन परिस्थितियों में भी उनका मन विचलित नहीं हुआ। वे हर वर्ष उसी श्रद्धा और नियम के साथ व्रत करती रहीं। उनका यह अटूट विश्वास ही उनके जीवन की सबसे बड़ी शक्ति बन गया।

समय बीतता गया और एक बार फिर चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि आई। इस बार राजा नल भी अपने जीवन के अनुभवों से सीख चुके थे। उन्होंने अपने अहंकार को त्याग दिया था और आस्था के महत्व को समझ लिया था। उन्होंने रानी के साथ मिलकर पूरे विधि-विधान और सच्चे मन से दशा माता का व्रत किया। उन्होंने माता से अपनी भूल के लिए क्षमा मांगी और आशीर्वाद की प्रार्थना की। उसी रात रानी दमयंती को स्वप्न में दशा माता के दर्शन हुए। माता ने उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा कि अब उनके जीवन की कठिनाइयां समाप्त होने वाली हैं। यह स्वप्न केवल एक कल्पना नहीं था, बल्कि यह उनके विश्वास का प्रतिफल था। जब रानी ने यह बात राजा को बताई, तो उनके मन में भी एक नई आशा जागी। धीरे-धीरे उनके जीवन में परिवर्तन आने लगा। परिस्थितियां सुधरने लगीं और अंततः दशा माता की कृपा से राजा नल को उनका खोया हुआ राज्य वापस मिल गया। यह घटना यह सिद्ध करती है कि सच्ची आस्था और धैर्य के साथ किया गया व्रत कभी व्यर्थ नहीं जाता।

इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि हमें कभी भी किसी की आस्था का अपमान नहीं करना चाहिए। आस्था एक व्यक्ति की आंतरिक शक्ति होती है, जो उसे कठिन परिस्थितियों में भी संभालकर रखती है। यदि हम इसका सम्मान करते हैं, तो यह हमें उन्नति की ओर ले जाती है, लेकिन यदि हम इसका अपमान करते हैं, तो इसके परिणाम भी गंभीर हो सकते हैं।

दशा माता के व्रत में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। पूजा के समय मन को शांत और एकाग्र रखना चाहिए। डोरा को सम्मानपूर्वक धारण करना चाहिए और उसे अपवित्र स्थान पर नहीं रखना चाहिए। व्रत के दौरान नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यही नियम इस व्रत की शक्ति को बनाए रखते हैं।

आज के आधुनिक युग में, जब लोग तेजी से आगे बढ़ना चाहते हैं और हर चीज को तर्क की कसौटी पर परखते हैं, तब भी ऐसे व्रत हमें यह सिखाते हैं कि जीवन में आध्यात्मिक संतुलन कितना आवश्यक है। यह हमें हमारी परंपराओं और संस्कारों से जोड़ते हैं और हमें यह याद दिलाते हैं कि केवल भौतिक सफलता ही जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है।

अंततः, दशा माता का व्रत हमें यह सिखाता है कि जीवन में आस्था, धैर्य और विनम्रता का कितना महत्व है। यह हमें यह समझाता है कि भाग्य केवल हमारे कर्मों से नहीं, बल्कि हमारी श्रद्धा और विश्वास से भी प्रभावित होता है। यदि हम सच्चे मन से माता की आराधना करते हैं और उनके नियमों का पालन करते हैं, तो हमारे जीवन में सुख, शांति और समृद्धि अवश्य आती है।

इसलिए, इस पवित्र व्रत को करते समय कभी भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए और न ही आस्था का अपमान करना चाहिए। क्योंकि जब आस्था का धागा मजबूत होता है, तभी जीवन की डोर भी मजबूत बनी रहती है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

डोसा नहीं, रहस्य ने ली मासूमों की जान: अहमदाबाद की दो बेटियों की मौत ने खड़े किए कई खौफनाक सवाल

Ahmedabad से आई एक दर्दनाक और उलझी हुई घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। प्रजापति परिवार की दो मासूम बेटियों की संदिग्ध मौत ने न केवल स्थानीय लोगों को सदमे में डाल दिया है, बल्कि पुलिस और जांच एजेंसियों के सामने भी एक जटिल पहेली खड़ी कर दी है। शुरुआत में जिस मामले को एक साधारण फूड पॉइजनिंग समझा जा रहा था, वह अब धीरे-धीरे एक रहस्यमयी और संभावित आपराधिक साजिश की दिशा में मुड़ता नजर आ रहा है। हर बीतते दिन के साथ इस केस में नए खुलासे सामने आ रहे हैं, जो इसे और भी पेचीदा बना रहे हैं।

घटना की शुरुआत उस वक्त हुई जब यह खबर सामने आई कि प्रजापति परिवार की दो छोटी बच्चियों की तबीयत अचानक खराब हो गई थी। परिवार के मुताबिक, बच्चियों ने डोसा खाने के बाद उल्टी और कमजोरी की शिकायत की थी। इसके बाद उनकी हालत तेजी से बिगड़ती चली गई और अंततः उनकी मौत हो गई। शुरुआती तौर पर यही माना गया कि यह फूड पॉइजनिंग का मामला है, जिसमें किसी खराब या जहरीले भोजन के कारण बच्चियों की जान चली गई। लेकिन जैसे-जैसे पुलिस ने मामले की जांच शुरू की, कई ऐसे पहलू सामने आने लगे, जिन्होंने इस थ्योरी पर सवाल खड़े कर दिए।

पुलिस ने सबसे पहले परिवार के सदस्यों से पूछताछ शुरू की। बच्चियों के पिता विमल प्रजापति को थाने बुलाकर करीब दो घंटे तक गहन पूछताछ की गई। इसके अलावा क्राइम ब्रांच की टीम ने भी उनसे अलग से सवाल-जवाब किए। पूछताछ के दौरान विमल प्रजापति ने खुद पर लगे किसी भी आरोप को सिरे से खारिज कर दिया। उनका कहना था कि उन्होंने अपनी बेटियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया और यह घटना किसी खाद्य पदार्थ में जहरीले तत्व के कारण हो सकती है। लेकिन पुलिस को उनके बयान में कुछ ऐसे विरोधाभास मिले, जिन्होंने शक की सुई को परिवार के भीतर ही घुमा दिया।

मामले को और गंभीर तब बना दिया जब यह पता चला कि बच्चियों की मां भावना अस्पताल में भर्ती हैं और उनकी हालत स्थिर नहीं है। पुलिस को उम्मीद है कि उनके स्वस्थ होने के बाद उनसे पूछताछ करने पर कई अहम जानकारी सामने आ सकती है। लेकिन फिलहाल उनकी अनुपस्थिति ने जांच को एक अधूरा रूप दे दिया है, जिससे कई सवाल अभी भी अनुत्तरित हैं।

इसी बीच जांच के दौरान एक और चौंकाने वाला खुलासा हुआ। पुलिस को घर से एक डायरी मिली है, जो कथित तौर पर बच्चियों की मां भावना की है। इस डायरी में बेटे के जन्म को लेकर कुछ भावनात्मक और निजी बातें लिखी गई हैं। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि इन नोट्स का इस घटना से सीधा कोई संबंध है या नहीं, लेकिन पुलिस इस पहलू को भी गंभीरता से जांच रही है। यह डायरी अब इस केस की एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गई है, जो जांच को एक नई दिशा दे सकती है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, परिवार के विभिन्न सदस्यों के बयानों में भी असमानताएं पाई गई हैं। कोई घटना के समय को लेकर अलग बात कर रहा है, तो कोई बच्चियों की तबीयत बिगड़ने के कारणों को लेकर अलग कहानी बता रहा है। इन विरोधाभासों ने पुलिस को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि कहीं इस पूरे मामले के पीछे कोई गहरी साजिश तो नहीं छिपी है।

अब जांच एजेंसियां इस केस को केवल एक हादसा मानकर नहीं चल रही हैं, बल्कि हर एंगल से इसकी पड़ताल कर रही हैं। इसी क्रम में अब वैज्ञानिक जांच का सहारा लेने की तैयारी भी की जा रही है। सूत्रों के मुताबिक, पुलिस लाई डिटेक्टर टेस्ट यानी झूठ पकड़ने वाली जांच कराने पर विचार कर रही है। इस जांच के दायरे में बच्चियों के माता-पिता के साथ-साथ दादा-दादी को भी शामिल किया जा सकता है। हालांकि यह प्रक्रिया तभी शुरू की जाएगी जब फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी यानी एफएसएल की रिपोर्ट सामने आ जाएगी।

एफएसएल रिपोर्ट इस पूरे मामले की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी मानी जा रही है। यही रिपोर्ट यह स्पष्ट करेगी कि बच्चियों की मौत किसी जहरीले पदार्थ के सेवन से हुई या फिर इसके पीछे कोई अन्य कारण था। यदि रिपोर्ट में किसी जहरीले तत्व की पुष्टि होती है, तो यह पता लगाने की कोशिश की जाएगी कि वह पदार्थ बच्चियों तक कैसे पहुंचा। वहीं अगर रिपोर्ट में ऐसा कुछ नहीं मिलता, तो यह मामला और भी गंभीर हो जाएगा और हत्या की आशंका को बल मिलेगा। इस घटना ने पूरे इलाके में भय और असमंजस का माहौल पैदा कर दिया है। पड़ोसी और स्थानीय लोग इस घटना से स्तब्ध हैं और तरह-तरह की आशंकाएं जता रहे हैं। कोई इसे पारिवारिक विवाद का परिणाम बता रहा है, तो कोई इसे एक सुनियोजित साजिश मान रहा है। हालांकि पुलिस अभी किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से बच रही है और हर पहलू की गहन जांच कर रही है।

इस मामले का एक और संवेदनशील पहलू यह है कि इसमें मासूम बच्चों की जान गई है। ऐसे मामलों में समाज की भावनाएं भी गहराई से जुड़ी होती हैं और हर कोई यह जानना चाहता है कि आखिर उन बच्चियों के साथ क्या हुआ। क्या यह वास्तव में एक हादसा था या फिर किसी ने जानबूझकर उन्हें नुकसान पहुंचाया? यह सवाल हर किसी के मन में घूम रहा है।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि वे इस मामले को बेहद गंभीरता से ले रहे हैं और किसी भी पहलू को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। जांच के हर चरण में सावधानी बरती जा रही है ताकि सच्चाई तक पहुंचा जा सके। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि जब तक सभी सबूत और रिपोर्ट सामने नहीं आ जाते, तब तक किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी।

इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या हम अपने ही घरों में सुरक्षित हैं? जब ऐसी घटनाएं सामने आती हैं, तो यह केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं होती, बल्कि यह पूरे समाज के लिए एक चेतावनी बन जाती है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर हमारे रिश्तों में, हमारे परिवारों में और हमारे सामाजिक ढांचे में क्या बदल रहा है।

अभी के लिए पूरा मामला जांच के दायरे में है और हर कोई एफएसएल रिपोर्ट का इंतजार कर रहा है। यही रिपोर्ट इस रहस्य से पर्दा उठाने में निर्णायक साबित हो सकती है। लेकिन तब तक यह घटना एक अनसुलझी पहेली बनी हुई है, जिसमें हर नया सुराग एक नई कहानी बयां कर रहा है।

दो मासूम जिंदगियों का यूं अचानक खत्म हो जाना केवल एक खबर नहीं है, बल्कि यह एक गहरी त्रासदी है, जो अपने पीछे कई सवाल छोड़ गई है। क्या उन बच्चियों को न्याय मिलेगा? क्या सच्चाई सामने आ पाएगी? और क्या इस रहस्य से पर्दा उठेगा? इन सभी सवालों के जवाब आने वाले दिनों में ही मिल पाएंगे, लेकिन फिलहाल यह मामला पूरे देश की नजरों में बना हुआ है और हर कोई इसकी सच्चाई जानने को बेताब है।

अहमदाबाद–पालनपुर खंड पर साबरमती डी केबिन पर नई 'वाई-कनेक्टिविटी' के कार्य हेतु ट्रैफिक ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेंगी

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा एवं परिचालन दक्षता को ध्यान में रखते हुए अहमदाबाद–पालनपुर खंड पर साबरमती डी केबिन पर नई 'वाई-कनेक्टिविटी' के कार्य हेतु नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य किया जाएगा। यह कार्य दिनांक 14 अप्रैल, 2026 (मंगलवार) को साबरमती – खोडियार सेक्शन के मध्य किया जाएगा। इस कार्य के पूर्ण होने से ट्रेनों की आवाजाही अधिक सुगम एवं तेज होगी, मार्ग क्षमता में वृद्धि होगी, परिचालन में लचीलापन आएगा तथा समयपालन में सुधार होगा, जिससे यात्रियों को बेहतर एवं अधिक विश्वसनीय सेवा का लाभ मिलेगा। यह कार्य के कारण निम्नलिखित ट्रेनें प्रभावित रहेंगी:

रद्द ट्रेनें:

▸▸ट्रेन संख्या 69249 (साबरमती – कटोसन रोड) दिनांक 13 एवं 14 अप्रैल, 2026 को पूर्णतः रद्द रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 69250 (कटोसन रोड – साबरमती) दिनांक 14 एवं 15 अप्रैल, 2026 को पूर्णतः रद्द रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 79433 (साबरमती – पाटन) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को पूर्णतः रद्द रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 79434 (पाटन – साबरमती) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को पूर्णतः रद्द रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 79435 (साबरमती – पाटन) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को पूर्णतः रद्द रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 79436 (पाटन – साबरमती) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को पूर्णतः रद्द रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 79431 (साबरमती – महेसाणा) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को पूर्णतः रद्द रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 79432 (महेसाणा – साबरमती) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को पूर्णतः रद्द रहेगी।

आंशिक रूप से रद्द ट्रेनें:

▸▸ट्रेन संख्या 14822 (साबरमती – जोधपुर) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को साबरमती – आबूरोड के मध्य आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 14821 (जोधपुर – साबरमती) दिनांक 13 अप्रैल, 2026 को आबूरोड – साबरमती के मध्य आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

टर्मिनल परिवर्तन:

▸▸ट्रेन संख्या 19032 (योगनगरी ऋषिकेश – साबरमती योगा एक्सप्रेस) दिनांक 13 अप्रैल, 2026 को साबरमती बीजी के स्थान पर साबरमती जंक्शन (जेल साइड (SBT)) तक शॉर्ट टर्मिनेट की जाएगी।

मार्ग परिवर्तन (Diversion):

▸▸ट्रेन संख्या 22497 (श्रीगंगानगर – तिरुचिरापल्ली हमसफर एक्सप्रेस) दिनांक 13 अप्रैल, 2026 को अपने निर्धारित मार्ग खोडियार – साबरमती डी केबिन – साबरमती बीजी – साबरमती ए केबिन के स्थान पर परिवर्तित मार्ग खोडियार – चांदलोडिया बी केबिन – साबरमती ए केबिन होकर चलेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 20902 (गांधीनगर कैपिटल – मुंबई सेंट्रल वंदे भारत एक्सप्रेस) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को अपने निर्धारित मार्ग खोडियार – साबरमती डी केबिन – साबरमती बीजी – साबरमती ए केबिन के स्थान पर परिवर्तित मार्ग खोडियार – चांदलोडिया बी केबिन – साबरमती ए केबिन होकर चलेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 20901 (मुंबई सेंट्रल – गांधीनगर कैपिटल वंदे भारत एक्सप्रेस) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को अपने निर्धारित मार्ग साबरमती ए केबिन – साबरमती डी केबिन – खोडियार के स्थान पर परिवर्तित मार्ग साबरमती ए केबिन – चांदलोडिया बी केबिन – खोडियार होकर चलेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 20960 (वडनगर – वलसाड इंटरसिटी) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को अपने निर्धारित मार्ग खोडियार – साबरमती डी केबिन – साबरमती बीजी – साबरमती ए केबिन के स्थान पर परिवर्तित मार्ग खोडियार – चांदलोडिया बी केबिन – साबरमती ए केबिन होकर चलेगी।

▸▸ट्रेन संख्या 20959 (वलसाड – वडनगर इंटरसिटी) दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को अपने निर्धारित मार्ग साबरमती ए केबिन – साबरमती डी केबिन – खोडियार के स्थान पर परिवर्तित मार्ग साबरमती ए केबिन – चांदलोडिया बी केबिन – खोडियार होकर चलेगी।

▸▸ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

बांद्रा टर्मिनस–गोमती नगर साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन के मार्ग में परिवर्तन एवं अतिरिक्त ठहराव की अधिसूचना

पश्चिम रेलवे द्वारा ट्रेन संख्या 05034/05033 बांद्रा टर्मिनस–गोमती नगर स्पेशल ट्रेन के मार्ग में अस्थायी अवधि के लिए परिवर्तन के साथ-साथ मार्ग में अतिरिक्त ठहराव की अधिसूचना जारी की गई है।

पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क विभाग द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेन संख्या 05034 बांद्रा टर्मिनस–गोमती नगर स्पेशल 14 अप्रैल, 2026 से 12 मई, 2026 तक परिवर्तित मार्ग से चलेगी। यह ट्रेन प्रत्येक मंगलवार को बांद्रा टर्मिनस से 23:00 बजे प्रस्थान करेगी तथा गुरुवार को 07:35 बजे गोमती नगर पहुंचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 05033 गोमती नगर–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 13 अप्रैल, 2026 से 11 मई, 2026 तक परिवर्तित मार्ग से चलेगी। यह ट्रेन प्रत्येक सोमवार को गोमती नगर से 14:00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 20:00 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन अब दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, वलसाड, सूरत, वडोदरा, रतलाम, कोटा, गंगापुर सिटी, बयाना, भरतपुर, मथुरा, कासगंज, इज्जतनगर, पीलीभीत, मैलानी, लखीमपुर, सीतापुर, डालीगंज तथा बादशाहनगर स्टेशनों पर ठहरेगी।

ट्रेन संबंधी विस्तृत जानकारी एवं रियल-टाइम ट्रेन स्थिति के लिए यात्री कृपया https://enquiry.indianrail.gov.in वेबसाइट पर जाकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

श्री रामाश्रय पाण्डेय ने पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक का कार्यभार ग्रहण किया

भारतीय रेल इंजीनियर्स सेवा (IRSE) के 1990 बैच के वरिष्ठ अधिकारी श्री रामाश्रय पाण्डेय ने शुक्रवार, 10 अप्रैल, 2026 को पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक का कार्यभार ग्रहण किया। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक के रूप में अपनी नियुक्ति से पहले आप पूर्व मध्य रेलवे, पटना में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण/दक्षिण) के पद पर कार्यरत थे।

अपने उत्कृष्ट कैरियर के दौरान श्री पाण्डेय ने उत्तर पूर्व रेलवे के वाराणसी मंडल में मंडल रेल प्रबंधक (DRM) के रूप में तथा उत्तर रेलवे, नई दिल्ली में मुख्य इंजीनियर के पद पर कार्य किया है। आपने गोरखपुर एवं समस्तीपुर में उप मुख्य इंजीनियर, रेलवे बोर्ड में सदस्य इंजीनियरिंग के विशेष कार्याधिकारी (OSD), रेलवे बोर्ड में निदेशक सतर्कता तथा हाजीपुर में उप मुख्य सतर्कता अधिकारी सहित अनेक महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएँ दी हैं। आप रेल विकास निगम लिमिटेड (RVNL) में ग्रुप जनरल मैनेजर के रूप में भी कार्यरत रहे, जहाँ आपने कई महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना परियोजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया।

श्री पाण्डेय आईआईटी रुड़की से बी.टेक. तथा आईआईटी दिल्ली से एम.टेक. की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं। रेल परिचालन तथा आधारभूत संरचना प्रबंधन के क्षेत्रों में श्री पाण्डेय ने व्यापक अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आपने इटली में ट्रैक रिकॉर्डिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया, सिंगापुर एवं मलेशिया में एडवांस्ड मैनेजमेंट प्रोग्राम पूरा किया, स्पेन में हाई-स्पीड ट्रेन परिचालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा तुर्की एवं नॉर्वे में सुरंग निर्माण तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

श्री पाण्डेय को आधारभूत संरचना के निर्माण तथा प्रबंधन एवं प्रशासन का व्यापक अनुभव प्राप्त है। आप अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच समान रूप से लोकप्रिय हैं और पूर्ण विश्वास है कि आपके गतिशील नेतृत्व में पश्चिम रेलवे नई उपलब्धियाँ हासिल करते हुए नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगी।

यात्रियों की सुविधा हेतु बसों की विशेष व्यवस्था

भारतीय रेलवे द्वारा यात्री सुविधाओं के उन्नयन एवं रेलवे अवसंरचना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से बुलेट ट्रेन परियोजना के अंतर्गत गेरतपुर–अहमदाबाद खंड पर प्रीकास्टेड पोर्टल बीम की स्थापना का कार्य किया जाएगा। इस कार्य के लिए दिनांक 13 अप्रैल, 2026 को ट्रैफिक ब्लॉक लिया जाएगा।

इस ट्रैफिक ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनों के संचालन में अस्थायी परिवर्तन किया गया है। इसी क्रम में ट्रेन संख्या 20901/20902 मुंबई सेंट्रल–गांधीनगर केपिटल-मुंबई सेंट्रल वंदे भारत एक्सप्रेस का संचालन आंशिक रूप से प्रभावित रहेगा, जिसमें यह ट्रेन वटवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट/प्रारंभ (ओरिजिनेट) की जाएगी।

यात्रियों को निर्बाध एवं सुगम यात्रा सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से अहमदाबाद मंडल द्वारा दिनांक 13 अप्रैल को विशेष बसों की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है—

वटवा से अहमदाबाद के लिए 12 एसी बसों की व्यवस्था की गई है।

वटवा से गांधीनगर के लिए 2 एसी बसों की व्यवस्था की गई है।

यह विशेष व्यवस्था यात्रियों को सुरक्षित एवं आरामदायक परिवहन उपलब्ध कराने के लिए की गई है, जिससे यात्रा में किसी प्रकार की असुविधा न हो।

नडियाद यार्ड में RUB पुनर्निर्माण कार्य हेतु ट्रैफिक ब्लॉक के कारण ट्रेनें प्रभावित

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्री सुरक्षा एवं रेलवे अवसंरचना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से वडोदरा मंडल के अंतर्गत नडियाद यार्ड में स्थित ब्रिज संख्या 670 पर रोड अंडर ब्रिज (RUB) के पुनर्निर्माण कार्य के अंतर्गत गर्डर लॉन्चिंग का कार्य किया जाएगा।

इस कार्य हेतु दिनांक 12 अप्रैल, 2026 (रविवार) को 13:30 बजे से 17:00 बजे तक (03 घंटे 30 मिनट) तथा दिनांक 15 अप्रैल, 2026 (बुधवार) को 11:30 बजे से 15:00 बजे तक (03 घंटे 30 मिनट) ट्रैफिक ब्लॉक लिया जाएगा। जिसके कारण निम्नलिखित ट्रेनें प्रभावित रहेंगी:

ट्रेन संख्या 12656 चेन्नई–अहमदाबाद नवजीवन एक्सप्रेस, दिनांक 12.04.2026 को वडोदरा मंडल में लगभग 10 मिनट रेगुलेट की जाएगी।

ट्रेन संख्या 22959 वडोदरा–जामनगर इंटरसिटी, दिनांक 12.04.2026 को निरस्त रहेगी।

ट्रेन संख्या 19036 मणिनगर–वडोदरा इंटरसिटी, दिनांक 15.04.2026 को निरस्त रहेगी।

ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

ऑन-ड्यूटी हज सुपरिटेंडेंट – 2026 के लिए पश्चिम रेलवे के कर्मचारी का चयन

पश्चिम रेलवे के लिए यह अत्यंत गर्व एवं सम्मान का विषय है कि बोटाद स्थित लोको पायलट श्री सब्बीरखान हिसामखान पठान का चयन "ऑन-ड्यूटी हज सुपरिटेंडेंट – 2026" के प्रतिष्ठित पद हेतु किया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि हज, जो कि विश्व की सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक यात्राओं में से एक है, उसके सफल एवं सुव्यवस्थित संचालन के लिए विभिन्न प्रशासनिक पदों पर अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है। इनमें "हज सुपरिटेंडेंट" का पद अत्यंत जिम्मेदारीपूर्ण एवं गौरवपूर्ण माना जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य तीर्थयात्रियों की सुविधा, सुरक्षा एवं मार्गदर्शन सुनिश्चित करना होता है।

श्री पठान का चयन केंद्र सरकार स्तर पर आयोजित कठोर चयन प्रक्रिया के माध्यम से किया गया है, जिसमें उन्होंने

सभी परीक्षाओं को सफलतापूर्वक उत्तीर्ण किया। उल्लेखनीय है कि पश्चिम रेलवे से वे इस पद के लिए एकमात्र चयनित उम्मीदवार हैं।

यह उपलब्धि न केवल श्री पठान के लिए व्यक्तिगत गर्व का विषय है, बल्कि पश्चिम रेलवे एवं संपूर्ण भारतीय रेलवे के लिए भी सम्मान की बात है। हज यात्रा के दौरान वे भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे तथा देश की गरिमा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

इस अवसर पर श्री पठान ने सर्वप्रथम अल्लाह का आभार व्यक्त करते हुए अपने परिवार, सहकर्मियों एवं रेलवे अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित किया, जिन्होंने उन्हें इस उपलब्धि तक पहुंचने में सहयोग प्रदान किया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि वे अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ करेंगे।

मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि पश्चिम रेलवे परिवार को श्री पठान की इस उपलब्धि पर गर्व है तथा उनके सफल एवं सुरक्षित हज दायित्व निर्वहन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की गई हैं।

गोंडल स्टेशन पर रेलवे कर्मचारियों की सतर्कता से यात्री का मोबाइल सुरक्षित लौटाया गया

भावनगर मंडल के गोंडल रेलवे स्टेशन पर रेलवे कर्मचारियों की सतर्कता एवं तत्परता का एक सराहनीय उदाहरण सामने आया है।

दिनांक 10 अप्रैल, 2026 को सवारी गाड़ी संख्या 19208 राजकोट-पोरबंदर एक्सप्रेस गोंडल स्टेशन के प्लेटफॉर्म क्रमांक 01 पर लगभग सायं 17:00 बजे आकर चली गई। गाड़ी के चले जाने के तुरंत बाद ऑन-ड्यूटी रेलवे पॉइंट्समैन सुश्री हेमवर्षा बेन ने रेलवे ट्रैक पर एक मोबाइल फोन की घंटी बजते हुए सुनी। उन्होंने तत्परता दिखाते हुए मोबाइल को सुरक्षित अपने कब्जे में लिया तथा इसकी सूचना रेलवे सुरक्षा बल (RPF) गोंडल के हेड कांस्टेबल श्री उत्पल भाई को दी।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि मोबाइल पर संपर्क स्थापित करने पर ज्ञात हुआ कि उक्त मोबाइल सादिया बेन (पत्नी श्री शब्बीर), निवासी धोराजी, जिला राजकोट का है, जो गोंडल से धोराजी जाने हेतु उक्त गाड़ी में यात्रा कर रही थीं। जल्दबाजी में सामान रखते एवं ट्रेन में चढ़ते समय उनका मोबाइल गिर गया था।

यात्री को मोबाइल के गोंडल स्टेशन पर सुरक्षित होने की सूचना दी गई। तत्पश्चात उनके परिजन श्री मो. यूसुफ अहमद भाई, निवासी गोंडल, स्टेशन पर उपस्थित हुए। आवश्यक सत्यापन प्रक्रिया पूर्ण करने के उपरांत रेलवे कर्मचारी एवं RPF स्टाफ द्वारा मोबाइल सुरक्षित रूप से उन्हें सुपुर्द किया गया।

मोबाइल प्राप्त होने पर यात्री एवं उनके परिजनों ने रेलवे एवं RPF कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि भावनगर मंडल यात्रियों की सुरक्षा एवं सुविधा के प्रति सदैव प्रतिबद्ध है तथा इस प्रकार की घटनाएं रेलवे कर्मचारियों की जिम्मेदारी एवं सजगता को दर्शाती हैं।

पश्चिम रेलवे-रतलाम मंडल

कैश-लेस बिलिंग प्रणाली पर रेडियोलॉजिकल जांच सुविधा प्रदान करने के लिए रुचि की अभिव्यक्ति (EOI)

105 बिस्तरों वाला रेलवे मुख्य अस्पताल पश्चिम रेलवे दाहोद 18000 से अधिक लाभार्थियों को व्यापक चिकित्सा सेवाएं प्रदान कर रहा है। प्रस्ताव दिए जाने की तारीख से 02 वर्षों के लिए कैश-लेस बिलिंग प्रणाली पर निम्नलिखित नैदानिक रेडियोलॉजिकल जांच सुविधाओं को आउट-सोर्स करने का प्रस्ताव है। 1) नियमित और नियमित के लिए यूएसजी (जब और जब आवश्यक हो) 2) सीटी और एमआरआई (जब और जब आवश्यक हो) 3) स्टैंड-बाय उद्देश्य के लिए एक्स-रे (जब और जब आवश्यक हो) प्रस्तावित दरें अक्टूबर-2025 सीजीएचएस (केंद्र सरकार स्वास्थ्य योजना) टियर-III (जेड सिटी) दर सूची आइटम संख्या 348 से 883 के अनुसार होनी चाहिए या दर के बराबर होनी चाहिए और दर इन आइटम सूची के अनुसार उद्धृत की जानी चाहिए। रेलवे डॉक्टर निरीक्षण और अनुशंसा के लिए जांच केंद्र/अस्पताल का दौरा करेंगे और जांच केंद्र/अस्पताल रेलवे मुख्य अस्पताल दाहोद के निकटतम होना चाहिए। 24 x 7 जांच सेवा को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक जांच केंद्र/अस्पताल को इस विज्ञापन के प्रकाशन/अपलोड होने की तारीख से 21 दिनों के भीतर सीलबंद लिफाफे में उद्धृत दरों के साथ अपनी इच्छा निम्नलिखित पते पर जमा करनी होगी। मुख्य चिकित्सा अधीक्षक (प्रभारी), रेलवे मुख्य अस्पताल, बी-साइट, फ्रीलैंडगंज रेलवे कॉलोनी, फ्रीलैंडगंज-389160 दाहोद (गुजरात) V/535

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly • हमें फॉलो करें: x.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे - रतलाम मण्डल

ई-नीलामी सूचना

मण्डल रेल प्रबंधक/मण्डल कार्यालय (कार्यलेखा शाखा) पश्चिम रेलवे, रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिये "खुली निविदा" ई - निविदा के माध्यम से वेबसाइट www.ireps.gov.in पर आमंत्रित करते है। विवरण इस प्रकार है- **ई-टेंडरिंग:** RTM-2026-27-36 **कार्य का नाम:** Ratlam-Augmentation and up gradation of Kurel Dam, Shimla Colony pond and other water sources. **अनुमानित मात्रा:** As per tender schedule **अनुमानित लागत:** ₹4,19,50,315.38 **बयाना राशी:** ₹ 8,39,000.00 **कार्य समापन अवधि:** 06 Months **Similar type of work:** Any Civil Engineering Work **वेबसाइट पर अपलोड करने की तिथि:** 07.04.2026 **निविदा खुलने की तिथि:** 30.04.2026. विस्तृत निविदा सूचना, अहाता शर्तें एवं अन्य शर्तें वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है. V/536

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

रिश्तों की राख में सुलगती दुश्मनी: बीकानेर में साले ने जीजा को तलवार से काट डाला, पारिवारिक विवाद बना खौफनाक हत्या की वजह

Bikaner के शांत माने जाने वाले इलाकों में से एक रामपुरा बस्ती में उस रात जो हुआ, उसने रिश्तों की पवित्रता पर गहरे सवाल खड़े कर दिए। जहां एक ओर परिवार को समाज की सबसे मजबूत इकाई माना जाता है, वहीं इस घटना ने दिखा दिया कि जब रिश्तों में दरार गहराती है, तो वही संबंध सबसे खतरनाक रूप ले सकते हैं। एक साले ने अपने ही जीजा की बेरहमी से हत्या कर दी, और वह भी इस कदर कि पूरे इलाके में दहशत फैल गई।

घटना 10 अप्रैल की देर रात की है, जब 30 वर्षीय जयसिंह राजपूत, जो रामपुरा बस्ती की गली नंबर 7 में रहते थे, अचानक एक हिंसक हमले का शिकार हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, जयसिंह पर तलवार से लगातार 7 से 8 वार किए गए। हमला इतना तेज और निर्मम था कि वह मौके पर ही गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़े। आसपास के लोगों ने जब उन्हें लहूलुहान हालत में देखा, तो तुरंत अस्पताल ले जाने का प्रयास किया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

इस हत्याकांड की खबर जैसे ही फैली, पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। लोग स्तब्ध थे कि आखिर किसने और क्यों इतनी निर्दयता से एक युवक की जान ले ली। शुरुआती जांच में पुलिस को यह मामला किसी आपसी रंजिश का प्रतीत हुआ, लेकिन जैसे-जैसे तहकीकात आगे बढ़ी, एक ऐसा सच सामने आया जिसने सभी को चौंका दिया।

पुलिस जांच में खुलासा हुआ कि इस हत्या के पीछे कोई बाहरी दुश्मन नहीं, बल्कि मृतक का अपना साला ही था। जयसिंह के साले कपिल सिंह ने एक नाबालिग साथी के साथ मिलकर इस पूरी वारदात को अंजाम दिया। पुलिस के अनुसार, दोनों आरोपियों को रात करीब 2 से 3 बजे के बीच ही पकड़ लिया गया था। पूछताछ में उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया, जिससे इस मामले की गुत्थी काफी हद तक सुलझ गई, लेकिन इसके पीछे के कारणों ने एक और बड़ी कहानी को उजागर किया।

जांच में सामने आया कि जयसिंह और उनकी पत्नी के बीच पिछले दो वर्षों से लगातार विवाद चल रहा था। यह विवाद केवल घरेलू तकरार तक सीमित नहीं था, बल्कि धीरे-धीरे यह दोनों परिवारों के बीच तनाव का कारण बन गया था। बताया जा रहा है कि इस विवाद के चलते साले कपिल सिंह के मन में अपने जीजा के प्रति गहरा आक्रोश और नफरत भर गई थी। यही आक्रोश अंततः एक खौफनाक हिंसा में बदल गया।

घटना से कुछ घंटे पहले ही जयसिंह के पिता को एक फोन कॉल आया था, जिसमें उन्हें चेतावनी दी गई थी कि अपने बेटे को समझा लें, नहीं तो उसे छोड़ेंगे नहीं। यह धमकी अब इस पूरे मामले की एक अहम कड़ी बन गई है, क्योंकि इससे यह स्पष्ट होता है कि यह हमला अचानक नहीं, बल्कि पूरी योजना के तहत किया गया था।

जब जयसिंह के पिता अपने बेटे की तलाश में निकले और रामपुरा बस्ती के एक मंदिर के पास पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि कुछ लोग जयसिंह को अस्पताल ले जा रहे हैं। उस समय तक स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी थी कि उन्हें बचाया नहीं जा सका। यह दृश्य किसी भी पिता के लिए सबसे भयावह था—अपने ही बेटे को इस

हालत में देखना।

पुलिस ने मामले की जांच के लिए आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली। फुटेज में दोनों आरोपी घटना स्थल की गली में प्रवेश करते हुए दिखाई दिए। यही सबूत उनके खिलाफ सबसे मजबूत कड़ी बना और पुलिस ने उन्हें हिरासत में लेकर पूछताछ की। पूछताछ के दौरान उन्होंने न केवल अपना अपराध स्वीकार किया, बल्कि यह भी बताया कि उन्होंने इस हत्या की योजना पहले से बनाई थी।

इस पूरे घटनाक्रम ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि आखिर एक पारिवारिक विवाद इतना गंभीर कैसे हो सकता है कि वह हत्या जैसे जघन्य अपराध में बदल जाए। क्या यह केवल गुस्से का परिणाम था या फिर लंबे समय से पनप रही नफरत का विस्फोट? पुलिस अब इस बात की भी जांच कर रही है कि इस साजिश में और कोई व्यक्ति शामिल तो नहीं था।

शव को पोस्टमार्टम के लिए पीबीएम अस्पताल की मोर्चरी में भेजा गया, जहां डॉक्टरों ने पुष्टि की कि जयसिंह की मौत अत्यधिक खून बहने और गहरे घावों के कारण हुई। रिपोर्ट के अनुसार, शरीर पर तलवार के कई गहरे वार के निशान पाए गए, जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि हमला बेहद क्रूर और जानलेवा इरादे से किया गया था।

घटना के बाद इलाके में तनाव की स्थिति को देखते हुए पुलिस ने एहतियातन अतिरिक्त बल तैनात कर दिया है। स्थानीय लोग अब भी इस घटना के सदमे में हैं और उनके मन में डर का माहौल बना हुआ है। कोई भी यह सोच भी नहीं सकता था कि एक पारिवारिक विवाद इस हद तक पहुंच जाएगा।

यह घटना केवल एक हत्या नहीं है, बल्कि यह समाज के उस बदलते चेहरे को भी उजागर करती है, जहां रिश्तों में सहनशीलता और संवाद की कमी होती जा रही है। जहां पहले छोटे-मोटे विवाद आपसी समझदारी से सुलझा लिए जाते थे, वहीं अब वही विवाद हिंसा का रूप ले लेते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे मामलों में समय रहते हस्तक्षेप और परामर्श की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के बीच चल रहे विवाद को सही समय पर सुलझा लिया जाता, तो शायद यह घटना टाली जा सकती थी। लेकिन जब गुस्सा और अहंकार हावी हो जाता है, तो परिणाम अक्सर विनाशकारी ही होते हैं।

पुलिस फिलहाल इस मामले की हर पहलू से जांच कर रही है और यह जानने की कोशिश कर रही है कि क्या इस हत्या के पीछे और भी लोग शामिल थे या नहीं। आरोपियों से लगातार पूछताछ की जा रही है और उनके मोबाइल फोन तथा अन्य साक्ष्यों की भी जांच की जा रही है।

इस घटना ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि अपराध केवल बाहरी दुश्मनों से नहीं, बल्कि कभी-कभी अपने ही घर के भीतर से जन्म लेते हैं। जब रिश्तों में विश्वास की जगह संदेह और संवाद की जगह गुस्सा ले लेता है, तो परिणाम इसी तरह के दुखद और खौफनाक हो सकते हैं। जयसिंह राजपूत की मौत केवल एक परिवार के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए एक चेतावनी है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम अपने रिश्तों को सही दिशा में ले जा रहे हैं या फिर उन्हें धीरे-धीरे टूटने दे रहे हैं। क्योंकि जब रिश्ते टूटते हैं, तो केवल भावनाएं ही नहीं, बल्कि कई बार जिंदगियां भी खत्म हो जाती हैं।

प्रसाद समझकर जहर खा गए मासूम: मंडला के आंगनवाड़ी केंद्र में लापरवाही ने खड़ा किया बड़ा सवाल

Madhya Pradesh के Mandla जिले से सामने आई एक हृदय विदारक घटना ने पूरे प्रदेश को झकझोर कर रख दिया है। जहां आंगनवाड़ी केंद्र बच्चों के पोषण, सुरक्षा और देखभाल का केंद्र होना चाहिए, वहीं एक गंभीर लापरवाही ने पांच मासूम जिंदगियों को मौत के मुहाने पर ला खड़ा किया। यह घटना केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि व्यवस्था की खामियों और जिम्मेदारी की अनदेखी का एक भयावह उदाहरण बनकर सामने आई है।

मंडला जिले के मोहगांव विकासखंड के ग्राम रमखिरिया के छपरा टोला स्थित एक आंगनवाड़ी केंद्र में यह घटना उस समय घटी, जब मासूम बच्चे खेल-खेल में एक ऐसी चीज के संपर्क में आ गए, जो उनके लिए जानलेवा साबित हो सकती थी। जानकारी के अनुसार, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ने अपने घर के एक कोने में आटे के साथ चूहा मारने की जहरीली दवा मिलाकर रखी हुई थी। यह वही स्थान था, जहां आंगनवाड़ी केंद्र संचालित हो रहा था। बच्चों की नजर उस मिश्रण पर पड़ी और उन्होंने उसे खाने की कोई सामान्य चीज या प्रसाद समझकर खा लिया।

कुछ ही देर में बच्चों की तबीयत बिगड़ने लगी। उन्हें उल्टियां होने लगीं और शरीर में कमजोरी आने लगी। वहां मौजूद लोगों को जब स्थिति की गंभीरता का एहसास हुआ, तो अफरा-तफरी मच गई। परिजनों के साथ-साथ केंद्र में मौजूद लोगों के हाथ-पांव फूल गए। तुरंत सभी पांचों बच्चों को मोहगांव के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने बिना समय गंवाए उनका इलाज शुरू किया।

डॉक्टरों ने बच्चों के शरीर में गए जहर के असर को कम करने के लिए जरूरी चिकित्सीय प्रक्रियाएं अपनाईं। प्राथमिक उपचार के बाद, बच्चों की हालत को देखते हुए उन्हें तुरंत जिला अस्पताल मंडला रेफर कर दिया गया। वहां विशेषज्ञ डॉक्टरों की निगरानी में उनका इलाज जारी रहा। राहत की बात यह रही कि समय पर उपचार मिलने के कारण सभी बच्चों की जान बच गई और अब उनकी स्थिति खतरे से बाहर बताई जा रही है। हालांकि, प्रशासन ने एहतियात के तौर पर उन्हें 24 घंटे तक निगरानी में रखने का निर्णय लिया है। बीमार बच्चों में सचिन (3 वर्ष), समर (9 वर्ष), शिवन्या (3 वर्ष), कृतिका (5 वर्ष) और दीप्ती (डेढ़ वर्ष) शामिल हैं। बताया जा रहा है कि ये सभी बच्चे आपस में रिश्तेदार हैं और दो भाइयों के परिवार से संबंध रखते हैं। इस तथ्य ने घटना को और भी संवेदनशील बना दिया है, क्योंकि एक ही परिवार के कई बच्चों की जान एक साथ खतरे में पड़ गई थी। इस घटना ने महिला एवं बाल विकास विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। आंगनवाड़ी केंद्र, जहां छोटे बच्चों की देखभाल और पोषण सुनिश्चित किया जाता है, वहां इस तरह की जहरीली वस्तु को खुले में रखना न केवल लापरवाही है, बल्कि यह बच्चों की सुरक्षा के साथ सीधा खिलवाड़ भी है। सवाल यह उठता है कि क्या इन केंद्रों में सुरक्षा मानकों का पालन नहीं किया जा रहा है? क्या नियमित निरीक्षण नहीं होते? और यदि होते हैं, तो ऐसी खामियां कैसे नजरअंदाज हो जाती हैं? स्थानीय ग्रामीणों में इस घटना को लेकर भारी आक्रोश है। उनका कहना है कि आंगनवाड़ी जैसे संवेदनशील स्थान पर इस तरह की लापरवाही अस्वीकार्य है। कई लोगों ने यह भी सवाल उठाया है कि यदि समय पर बच्चों को अस्पताल नहीं ले जाया जाता, तो परिणाम कितना भयावह हो सकता था। यह घटना एक चेतावनी है कि यदि समय रहते सुधार नहीं किए गए, तो भविष्य में इससे भी बड़ी दुर्घटनाएं हो सकती हैं।

जिला प्रशासन ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल जांच के आदेश दे दिए हैं। एसडीएम Sachin Jain ने एक जांच टीम गठित करने के निर्देश दिए हैं, जो इस पूरे मामले की गहराई से जांच करेगी। उन्होंने स्पष्ट किया है कि यदि किसी भी स्तर पर लापरवाही पाई जाती है, तो संबंधित लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

इसके साथ ही प्रशासन ने एक महत्वपूर्ण निर्णय भी लिया है। अब आंगनवाड़ी केंद्रों में चूहा मारने की जहरीली दवाओं के उपयोग पर रोक लगाने के निर्देश दिए गए हैं। इसके स्थान पर सुरक्षित और गैर-घातक उपायों जैसे पिंजरों के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जाएगा, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। यह घटना केवल एक प्रशासनिक चूक नहीं है, बल्कि यह समाज के उस पहलू को भी उजागर करती है, जहां कभी-कभी लापरवाही के छोटे-छोटे कार्य बड़े हादसों में बदल जाते हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, जो बच्चों की देखभाल के लिए जिम्मेदार होती हैं, उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे हर परिस्थिति में सतर्क और जिम्मेदार रहें। लेकिन इस मामले में यह जिम्मेदारी कहीं न कहीं कमजोर पड़ती नजर आई।

विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों के साथ जुड़े किसी भी स्थान पर सुरक्षा के मानकों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

इश्क, धोखा और साजिश का खतरनाक खेल: अलवर में बैंक मैनेजर की हत्या की योजना ने खोले रिश्तों के अंधेरे चेहरे

Alwar से सामने आया यह मामला केवल एक आपराधिक घटना नहीं, बल्कि आधुनिक रिश्तों की जटिलता, विश्वासघात और लालच का एक ऐसा खौफनाक चित्र है, जिसने हर किसी को हैरान कर दिया है। एक बैंक मैनेजर की पत्नी, दो बच्चों की मां, और एक साधारण टैक्सी ड्राइवर के बीच पनपा रिश्ता किस तरह एक हत्या की साजिश में बदल गया, यह कहानी किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं लगती, लेकिन हकीकत इससे कहीं ज्यादा भयावह है।

इस पूरे मामले की शुरुआत एक सामान्य वैवाहिक जीवन से होती है। साल 2018 में अर्चना अरोड़ा की शादी कर्णव खत्री से हुई थी, जो Jaipur में एक निजी बैंक में मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। शादी के बाद कुछ वर्षों तक सब कुछ सामान्य चलता रहा। दंपति के दो बच्चे भी हुए और बाहर से देखने पर यह एक सामान्य और सुखी परिवार प्रतीत होता था। लेकिन जैसे-जैसे समय बीता, दूरी और परिस्थितियों ने इस रिश्ते में दरार डालनी शुरू कर दी।

नौकरी के कारण कर्णव को जयपुर में रहना पड़ता था, जबकि अर्चना अलवर में रहती थी। पति-पत्नी के बीच बढ़ती भौगोलिक दूरी धीरे-धीरे भावनात्मक दूरी में बदलने लगी। इसी बीच अर्चना का जयपुर आना-जाना बढ़ गया, और उसने टैक्सी का सहारा लेना शुरू किया। यही सफर, जो महज एक सुविधा था, उसके जीवन का सबसे बड़ा मोड़ बन गया।

जिस टैक्सी में अर्चना अक्सर सफर करती थी, उसके ड्राइवर ऋषभ शर्मा से उसकी पहचान हुई। शुरुआत में यह केवल सामान्य बातचीत तक सीमित थी, लेकिन धीरे-धीरे यह बातचीत एक गहरे संबंध में बदल गई। दोनों के बीच नजदीकियां इतनी बढ़ीं कि उन्होंने एक-दूसरे के बिना जीवन की कल्पना करना शुरू कर दिया। यह रिश्ता अब केवल भावनात्मक नहीं रहा, बल्कि एक ऐसा जुनून बन गया, जिसमें उन्हें अपने आसपास के रिश्ते बाधा लगने लगे।

ऋषभ शर्मा, जो मूल रूप से दौसा जिले के बांदीकुई का रहने वाला था, अपने जीवन में पहले ही कई संघर्षों से गुजर चुका था। मां की मौत के बाद वह अलवर के राजगढ़ क्षेत्र में अपने नाना के घर रहने लगा था। अप्रैल 2025 में अर्चना और ऋषभ की मुलाकात हुई और कुछ ही महीनों में यह रिश्ता इतनी गहराई तक पहुंच गया कि उन्होंने साथ रहने का निर्णय ले लिया।

लेकिन इस रिश्ते के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा था अर्चना का पति कर्णव। यही वह बिंदु था, जहां से इस प्रेम कहानी ने एक खतरनाक मोड़ लिया। दोनों ने तय किया कि यदि उन्हें साथ रहना है, तो कर्णव को रास्ते से हटाना होगा। यही सोच धीरे-धीरे एक साजिश में बदल गई, जिसने पूरे मामले को अपराध की दुनिया में धकेल दिया।

सितंबर 2025 में अर्चना ने अपने दो साल के बेटे को साथ लिया, घर से नकदी और जेवर उठाए और ऋषभ के साथ चली गई। पहले वह जयपुर पहुंची और बाद में दिसंबर 2025 में भिवाड़ी में रहने लगी। इस दौरान उसने अपने पुराने जीवन से लगभग सभी संबंध तोड़ लिए थे। हालांकि कुछ समय बाद वह वापस अलवर लौटी, लेकिन जनवरी 2026 से उसने फिर से ऋषभ के साथ रहना शुरू कर दिया।

इसी बीच मार्च 2026 में एक ऐसा घटनाक्रम सामने आया, जिसने इस पूरे मामले की असली तस्वीर उजागर कर दी। पुलिस के अनुसार, ऋषभ ने कर्णव को टैक्सी में बैठाकर जयपुर ले जाने के दौरान रास्ते में उस पर हमला करने की कोशिश की। यह हमला सुनियोजित था और इसका उद्देश्य साफ था—कर्णव की हत्या। लेकिन किस्मत ने साथ दिया और कर्णव किसी तरह इस हमले से बच निकले।

इस घटना के बाद कर्णव ने 7 मार्च को पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने पुलिस को न केवल पूरी घटना की जानकारी दी, बल्कि कुछ ऑडियो रिकॉर्डिंग जैसे महत्वपूर्ण सबूत भी सौंपे, जिनसे यह साबित होता था कि यह हमला एक सोची-समझी साजिश का हिस्सा था। पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच शुरू की और धीरे-धीरे पूरे षड्यंत्र का खुलासा होने लगा। जांच के दौरान एक और चौंकाने वाला तथ्य सामने आया। अर्चना ने पहले अपने ही प्रेमी ऋषभ के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज कराया था। लेकिन बाद में अदालत में उसने अपने ही आरोपों से मुकर गई। यह घटनाक्रम इस बात की ओर इशारा करता है कि दोनों के बीच संबंध केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि जटिल और स्वार्थपूर्ण भी थे।

इतना ही नहीं, ऋषभ के जेल जाने के बाद अर्चना ने अपने पति के घर एक धमकी भरा पत्र भेजा, जिसमें पहले 30 लाख और बाद में 50 लाख रुपये की मांग की गई। यह मांग केवल पैसे के लिए नहीं थी, बल्कि यह एक दबाव बनाने की कोशिश थी, जिससे कर्णव को डराकर उनकी राह से हटाया जा सके।

पीड़ित के अनुसार, आरोपियों ने फोन पर भी लगातार धमकियां दीं। उन्होंने कहा कि यदि उनकी मांग पूरी नहीं की गई, तो वे केवल कर्णव को ही नहीं, बल्कि उनके पूरे परिवार को नुकसान पहुंचाएंगे। यह धमकियां इस मामले को और भी गंभीर बना रही थीं, क्योंकि इसमें केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि पूरे परिवार की सुरक्षा दांव पर थी।

पुलिस ने तकनीकी साक्ष्यों और जांच के आधार पर दोनों आरोपियों की तलाश शुरू की। कुछ समय तक फरार रहने के बाद आखिरकार दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें कोर्ट में पेश किया गया, जहां अर्चना को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया, जबकि ऋषभ को पुलिस रिमांड पर लेकर आगे की पूछताछ की जा रही है। इस पूरे मामले ने कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। क्या यह केवल एक प्रेम प्रसंग था, जो गलत दिशा में चला गया? या फिर यह लालच, स्वार्थ और व्यक्तिगत इच्छाओं का ऐसा संगम था, जिसने एक परिवार को बर्बादी के कगार पर ला खड़ा किया? इस घटना ने यह भी दिखा दिया है कि जब रिश्तों में विश्वास खत्म हो जाता है, तो वे कितनी आसानी से अपराध का रूप ले सकते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे मामलों में भावनात्मक असंतुलन, संवाद की कमी और व्यक्तिगत इच्छाओं का नियंत्रण न होना प्रमुख कारण होते हैं।

भाजपा के 60 वर्ष की आयु सीमा के नियम से कार्यकर्ता नाराज, स्थानीय चुनावों में असंतोष बढ़ रहा है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। गुजरात के विभिन्न शहरों में होने वाले नगर निगम, जिला पंचायत और तालुका पंचायत चुनावों में भारतीय जनता पार्टी का मौड़ी मंडल 60 वर्ष से अधिक आयु के और तीन कार्यकाल तक पार्षद रह चुके पार्षदों को टिकट नहीं देगा। यह नियम न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि विधायकों और सांसदों पर भी लागू होना चाहिए। इस नियम के कारण, पार्टी कार्यकर्ताओं की उम्मीदें चकनाचूर हो गई हैं, जिन्होंने अपना जीवन पार्टी के लिए समर्पित कर दिया है, घर छोड़कर पार्टी के प्रचार कार्य में लगे रहे, बैनर बनवाए और लगाए, ट्रक भरवाए और पार्टी के लिए निरंतर संघर्ष किया।

उम्र के बहाने उनकी उम्मीदें चकनाचूर हो गई हैं। जब देश के सफल प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री से प्रधानमंत्री पद तक के सफर में देश के हित में बिना एक दिन भी छुट्टी लिए लगातार सेवा कर रहे हैं, तब उनकी उम्र 75 वर्ष से अधिक हो चुकी है, लेकिन वे स्वस्थ हैं और देश की सेवा कर रहे हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि अगर विधायकों, राज्यसभा और लोकसभा सांसदों पर 60 वर्ष की आयु सीमा का नियम लागू नहीं होता, तो अगर भाजपा 60 वर्ष की आयु सीमा लागू करना चाहती है, तो यह सीमा सभी पर लागू होनी चाहिए। इसमें कोई भेदभाव या पक्षपात नहीं होना चाहिए। नियम बनाने वालों पर भी इस नियम का सख्ती से पालन होना चाहिए।

अब बात करते हैं भाजपा के आम कार्यकर्ता की। आम कार्यकर्ता को पता भी नहीं चलता कि कब उसने पार्टी सेवा के 60 साल पूरे कर लिए। जब वह तन-मन और धन से पार्टी की सेवा करता है और टिकट की मांग करता है, तो उसे उम्र के बहाने टिकट से वंचित कर दिया जाता है। भाजपा के लिए वर्षों तक दिन-रात मेहनत करने वाले, दिन-रात पार्टी की सेवा करने वाले, मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री की सभाओं में जनसमर्थन करने में अहम योगदान देने वाले कार्यकर्ताओं की रक्षा करने के बजाय, हवा का रुख देखकर पाल मोड़ने के बजाय, भाजपा ने 60 साल और तीन कार्यकाल का नियम बनाकर जमीनी कार्यकर्ताओं के भीतर छिपे गुस्से को भड़काने का पाप किया है।

कार्यकर्ताओं में इसके खिलाफ गंभीर असंतोष है। और यह असंतोष पार्टी के प्रदर्शन को प्रभावित किए बिना नहीं रहेगा। संक्षेप में, उम्मीदवारों के साथ उम्र या किसी अन्य आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता। सूरत के कई उम्मीदवार हताश और निराश महसूस कर रहे हैं। यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि यदि देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रिमंडल के मंत्री, सांसद, मुख्यमंत्री और विधानसभा मंत्री सभी 75 वर्ष से अधिक आयु के हैं, तो नगरपालिका, नगर निगम, जिला पंचायत और तालुका पंचायत के चुनावों के लिए ही 60 वर्ष और तीन कार्यकाल का नियम क्यों लागू है? ऐसे में, जब भाजपा ने अपने पार्टी आधार के सक्रिय कार्यकर्ताओं के साथ-साथ देश की जनता में भी गुप्त आक्रोश पैदा कर दिया है, तो आगामी चुनावों में राष्ट्रपति की हार होना कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी! इसके अलावा, क्रॉस वोटिंग से भी पार्टी को नुकसान होने की उतनी ही संभावना है, इसलिए सूरत नगर निगम और भविष्य में होने वाले अन्य चुनावों के परिणाम चौंकाने वाले होंगे या नहीं, यह देखना बाकी है!

वर्तमान में, जब चुनाव आयोग के आदेशों के बाद एसआईआर (SIR) लागू किया जा रहा है, जिसमें मतदाताओं की संख्या में कमी आई है और जातिगत समीकरण भी बदल गया है, तो यह मुद्दा भी इन चुनावों के परिणामों पर असर डालने वाला है। यह निर्विवाद है।

सप्ताह के दौरान क्रूड ऑयल वायदा 1475 रुपये फिसला: सोना वायदा में 3754 रुपये और चांदी वायदा में 11273 रुपये का ऊछाल

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 6 से 9 अप्रैल के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 1570899.64 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 224535.06 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 1346360.58 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का अप्रैल वायदा 36353 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 42437.41 करोड़ रुपये का हुआ। कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 133893.92 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा सप्ताह के आरंभ में 148847 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 154934 रुपये के उच्च और 148298 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 149680 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 3754 रुपये या 2.51 फीसदी की तेजी के संग 153434 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-गिनी अप्रैल वायदा सप्ताह के अंत में 3107 रुपये या 2.6 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 122419 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल अप्रैल वायदा 397 रुपये या 2.66 फीसदी की तेजी के संग सप्ताह के अंत में 15332 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर पहुंचा। सोना-मिनी मई वायदा सप्ताह के आरंभ में 147848 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 153390 रुपये के उच्च और 146682 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 3932 रुपये या 2.65 फीसदी की मजबूती के साथ 152072 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-टेन अप्रैल वायदा प्रति 10 ग्राम सप्ताह के आरंभ में 147797 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 153697 रुपये के उच्च और 147137 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 148539 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 3827 रुपये या 2.58 फीसदी की बढ़त के साथ 152366 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 224535.06 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 1346360.58 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 133893.92 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 36353 पॉइंट के स्तर पर

230716 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 246660 रुपये और नीचे में 224621 रुपये पर पहुंचकर, 232495 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 11273 रुपये या 4.85 फीसदी बढ़कर 243768 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा सप्ताह के अंत में 10291 रुपये या 4.37 फीसदी की तेजी के संग 245936 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 10103 रुपये या 4.29 फीसदी तेज होकर सप्ताह के अंत में यह कॉन्ट्रैक्ट 245862 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

मेटल वर्ग में 14376.45 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा अप्रैल वायदा सप्ताह के अंत में 37.85 रुपये या 3.28 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 1192.95 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि जस्ता अप्रैल वायदा 7.65 रुपये या 2.37 फीसदी की मजबूती के साथ सप्ताह के अंत में 330.85 रुपये प्रति किलो बोला गया। इसके सामने एल्यूमीनियम अप्रैल वायदा 10 पैसे या 0.03 फीसदी घटकर 354.25 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ। जबकि सीसा अप्रैल वायदा सप्ताह के अंत में 75 पैसे या 0.38 फीसदी घटकर 194.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 76189.16 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल अप्रैल वायदा 10350 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 10990 रुपये और नीचे में 8535 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 1475 रुपये या 14.17 फीसदी गिरकर 8933 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी अप्रैल वायदा 1469 रुपये या 14.12 फीसदी की गिरावट के साथ 8934 रुपये प्रति बैरल के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस अप्रैल वायदा 268.1 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 271.8 रुपये और नीचे में 249.2 रुपये पर पहुंचकर, 264 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 13.4 रुपये या 5.08 फीसदी गिरकर 250.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी अप्रैल वायदा सप्ताह के अंत में 13.4 रुपये या 5.08 फीसदी लुढ़ककर 250.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल अप्रैल वायदा 1050 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 30.8 रुपये या 2.99 फीसदी औंधकर 998.6 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 87291.33 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 46602.59 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 9989.66 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 2315.57 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 111.15 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 1960.07 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा सप्ताह के दौरान क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 60593.85 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 15403.36 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

सप्ताह के अंत में ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 7385 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 32157 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 13880 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 179241 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 31116 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 5704 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 14541 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 54308 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 8361 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 40164 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स अप्रैल वायदा सप्ताह के आरंभ में 36002 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 36813 के उच्च और 35687 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 528 पॉइंट बढ़कर 36353 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।